दुर्गा पुजवांयो सुतहि मीरा सों कह तत्र ६१ दुर्गा देवी पूजिये
जासों दृढ़ अहिवात। सुनत सासुके बचन इमि कहमीरा यह
बात ६२ मैंतौ गिरिधर लाल हित भेंट कियो यह देह। नवै दूसरे
कोकि विधि शीश परायो एह ६३ छन्दमाधवी। नवशीश य-
दानँदलाल बिना तिहि काटिकरै किन भिन्नसही। कट बुद्धि
भुलाव जुगान हरी कटिजीभ गिरै गतनाम मही॥ कटि हाथ
गिरैं हरि पूज बिना कटि पाद गिरैं गतक्षेत्र नहीं। मति हीन
हियो जरिजाइसदा पदकंज बिना मनहेरतही ६४ नाहिं आक्षिग
हैं किमि अंधपदै हरिरूप लखै नाहिं जौन हिये। बधिरत्वग
हैं किन कर्ण दुहू नँदलाल सुधानहिं पानकिये॥ जपयोग
बिराग सबै धृग है ब्रजराज बिना मन पाददिये। जन धन्य
सदा ब्रजराज पदै जल जानिमनै मनमीन लिये ६५ दो०।
मीराबाई सासु सुनि अप्रसन्न तिहिकाल। जलबल करि पति
ढिगगई कहत भई सब हाल ६६ कीन्हों राना क्रोध सुनि मा-
रन कियो उपाइ। तिहिरानी समुझायऊं तबतौ रहो चुपाइ ६७
चौ०। अलग भवनमें दियो टिकाई। भगवतसह मीरातहँआई॥
मीराजाइ बास किय जहँवां। गिरिधर लाल बिराजे तहँवां ६८
भगवत काहँ बास शुभदीन्हा। अति शृंगार साज सब कीन्हा॥
अहनिशि तिन में मनहिं लगायो। तिन सतसंगति काल
बितायो ६९ रानाकी पुत्री छबिधामा। उदाबाइ रह जाकर
नामा॥ मीराके समीप चलि आई। याबिधि बचन कहे समु-
झाई ७० बड़घर की बेटी तूआई। भाभी सुन बिबेक मनलाई॥
बैरागिन को छोंड़ैसंगा। कुल कलङ्क दोनोंके अंगा ७१ मीरा-
बाई कह सुनिलीजै। शुभ उत्तर तुमको हम दीजै॥ कोटि
न जन्म कलङ्क नशावै। जो सतसङ्गतिमें मनलावै ७२ जिहि
सतसंगति नहीं पियारी। सोइ कलङ्की नरतनु धारी॥ सतसं-
गति जिन्दगी हमारी। दुखितहि शिक्षा उचित तुमारी ७३
उदांबाइ सुनिकैं फिरिआई। मातु पितासों कहो बुझाई॥ मीरा-

बाइ भक्ति दृढ़धारा । काहू बचन न करिहि बिचारा ७४ राना
सुनत क्रोध अति करिकै । पठयोगरल कटोरा भरिकै ॥ चरणा-
मृतको नाम सुनायो । मीराहर्षित शीश चढ़ायो ७५ अतिआ-
नन्द सहित किय पाना । करन लगी भगवत गुण गाना ॥
राना सुनि अति हर्षित भयऊ । अब मीराबध याबिधि कयऊ
७६ निरखत कहत कोउ अबआई । मीरा दीन्हे प्राणगवाई ॥
इत मीरा मुख कमल सुहावा । च्चण च्चण में शोभाअति पावा
७७ महाराजश्री गिरिधर लाला । के शृंगार माहँ बेहाला ॥
शोभामाहँ छकी अति सोई । नये प्रकार साज सबजोई ७८
करत साज सबनाना भांती । पुनि भगवत कीर्त्तन-सुख पांती ॥
रस अरु प्रेमामृत में भरई । सेवानई विविधि विधि करई ७६
हालाहल गरमी कछु जानी । भगवत सों तब विनय बखानी ॥
बिरसन व्यथा नेकनहिं व्यापी । रानादांत जीभ. तब चापी ८०
द्वारपाल राखेतबराना । तिनसों याविधि बचन बखाना ॥ सा-
धुन बोलै मीराबाई । दीजो तब तुम हमहिं बताई ८१ बधकर-
वावहिं तबतिहि केरा । द्वास्थितसुनि पहुँचे तिहिबेरा ॥ दिनदि-
न प्रति श्री मीरा बाई । गिरिधर लाल साथ सुख पाई ८२ ठ-
ट्ठाहँसी खेल बतरावा । प्रिय बल्लभ सँगहो जस भावा ॥ काया
अभिमानी जिमि करई । ता बिधि महामोद उर भरई ८३ द्वार-
पाल इकदिन सुनिपायो । राना के ढिग खबरि पठायो ॥ की
या क्षण पूरुषहै कोई । ठट्ठाहँसी करत हैसोई ८४ नग्न खड्ग लै
राना धायो । खोल कपाट पुकारि सुनायो ॥ खोले मीराबाइ
केवारा । भीतर गो नहिं काहु निहारा ८५ क्रोधित कह्यो गयो
वह काहां । ठट्ठा हँसी करत रहयाहां ॥ मीरा जीने बचन उचारे
अहै बिराजत अग्र तुम्हारे ८६ आंखी खोलि देखि किन लीजै
वाकी तुमसों लाज न कीजै ॥ मीराबाई गिरिधर लाला । रहे
खेलि चौसर तिहि काला ८७ राना पहुँचत भो जिहिं काला ।
पासाडारन हरिकर चाला ॥ पासा भगवत करसो देखी । मन

में लज्जा कियो बिशेखी ८८ घूमि बहुरि निज मन्दिर आयो। यह प्रताप तहँदेख न पायो॥ परन नेक निश्चय दृढ़ आई। तब लगि कृपा न कर यदुराई ८९ दो०। जबलगि कृपा न करत हैं भगवत भक्त कृपाल। जियाल्लाल तब लागि नहीं अपनावत नँदलाल ९० मीरा जीके बधन को राना करत उपाइ। कृपा करहिं नँदलाल किमि नतुलेते अपनाइ ९१ चौ०। कोऊ साधूभेष बनायो। मीरा के समीप चलि आयो॥ कहोकि आयसु गिरिधर लाला। मोको दियो सुनिय ततकाला ९२ पूरुष अंग संग सुख जोई। मीरा जीको दीजै सोई॥ मीराबाईने सुनि एहा। कहो करौं शिरधरि युतनेहा ९३ भोजन प्रथम आपु करि लीजै। अंग संग मोसों पुनि कीजै॥ यह कहि मीरा तहँचलि आई। संतन की जहँ बैठिअथाई ९४ आंगन माहँ पलँग बिछवायो। पुनि सजिकै निज अंग बनायो॥ धूर्त्तसाधु कहँ बोलि पठाई। कहो कि पलँग पधारिय आई ९५ लज्जा भयकछु नेक नकीजै। गिरिधर लाल बचन चित दीजै॥ आज्ञापालन उचित सदाई। सुनत मूर्ख वह गयो सुखाई ९६ गयोमोह उर ज्ञान प्रकाशा। मीराबाइ चरण किय आशा॥ त्राहि त्राहि इमि कहिबे लीन्हा। मीरादेखि दया अति कीन्हा ९७ दीन्ही भगवत भक्ति सुहाई। मीरा कथा अपर सुखदाई॥ अकबर बादशाह यह जानी। मीरा है अति सुन्दर रानी ९८ तानसेन को संग लवाई। दर्शन हेत गयो सुख पाई॥ दर्शन कीन्ह भक्ति अति देखी। आपुहि जानो धन्य विशेखी ९९ तानसेन अति हर्षित भयऊ। हरिहि समर्पि बिष्णु पद दयऊ॥ आनन्दित दोनों घर आये। मीराबाई आनँद पाये १०० दर्शनहित वृन्दाबन आई। गईरहत जहँ जीव गुसाईं॥ दर्शन हित कहाइ पठवायो। जीवगुसाईं बचन सुनायो १०१ युवतिनको देखत हमनाहीं। सुनि मीराबोली तिनपाहीं॥ हमसब सखी रूपइत जाना। गिरिधरलाल पुरुष इकमाना १०२ पर

अबयहौ आजु हमजाना। हैं ब्रजराज दुसरिहा नाना॥ जीव गुसाईं सुनि यह बाता। नांगेपग धाये हरषाता १०३ दर्शन मीराजीके कीन्हे। प्रेमपूर्णहो आनँद लीन्हे॥ फिरि मीरा जी आनँद पाई। सब बन कुंजन जाइ मँझाई १०४ भगवतरूप मधुर सुखदाई। धारिहि ये निजदेश सिधाई॥ द्वेषबुद्धिराना की देखी। गइ द्वारका बहुरि बिशेखी १०५ गिरिधरलाल शोभ में छाकी। हरिशृंगार मग्न मतिजाकी॥ रहीतहां मीरा सुख पाई। राना नगर न साधु लखाई १०६ मीरागमन सबन सुनि लीन्हा। तजि आगमन साधुजन दीन्हा॥ होन उपद्रव बहु बिधि लागे। राना भे चिंतासों पागे १०७ भक्ति प्रताप जानि मनमाहीं। ब्राह्मण बोलि पठायो ताहीं॥ मीराको लवहु पलटाई। सुनतहि बिप्र चले तहँ धाई १०८ पहुँचे चलि मीरा ढिग जाई। राणाकी तिन बिनय सुनाई॥ पुनि बिप्रन जानो मनमाहीं। मीरा जानचहत अबनाहीं १०९ तब धरने बैठे सब बिप्रा। तजिहैं अन्न चलहु नतुच्छिप्रा॥ कहमीरा सुनिये द्विजराई। बिदाहोइ भगवत सों आई ११० श्री रणछोर कृपा इतबासा। औरनहीं हमरेकछुआसा॥ मीरागई भाषि या भांती। गिरिधरलाल प्रेमरंग राती १११ प्रेम मग्नैहो कीन्हों गाना। तुमसब घटके अन्तर जाना॥ मीराके प्रभुगिरिधर नायक। अबन बिछोह करिय सब लायक ११२ भगवत आनँदघनसुख खानी। परमप्रीति मीराउर जानी॥ करिनहिं अलग सकेतिहि काला। लीन्ह मिलाइ अंगनिज हाला ११३ देरभई तब ब्राह्मणधाये। ढूंढन भगवत मन्दिर आये॥ मीराकोह तहां नहिं देखा। तिनको अम्बरलखो बिशेखा ११४ भगवत पीताम्बर नहिंलेखा। मीराकी सारीतन देखा॥ निश्चय भक्ति जानि मनमाहीं। आयेघूमि नगर निजकाहीं ११५ मीराकी यात्रा सुनि पायो। अकबरबादशाह चढ़ि आयो॥ गढ़चित्तौर घेरि पुनि लीन्हा। करिकै युद्ध बिजय सो कीन्हा ११६ दो०। या

कंकार समानी। तामहँ छिपी न कोऊ जानी १२९ कलियुग अघ दुर्गन्ध समाना। मृतक ऊंटदुर्गन्धन जाना॥ पुनि भगवत शृंगार सुहावा। अतर सुगंध हिये महँ छावा १३० सो दुर्गंध बिकार न आई। तीनि दिवस तहँ रही छिपाई॥ चौथे दिवस निकर यह देखा। मेला गंगा जात बिशेखा १३१ ताके सँग गंगा पर जाई। दाना भूषण किये अन्हाई॥ मथुरा माहँ बहुरि चलि आई। मज्जन यात्राकिय हरषाई १३२ गई बहुरि वृन्दाबन खासा। ब्रह्मकुण्ड पर कीन्ह निवासा॥ हरि चितवन अपर जो ध्याना। रहन लगी तामें सुख दाना १३३ करमैती के पिता सुहाये। ढूंढ़त मथुराजी में आये॥ चौबे एकपता बतलाये। पता पाइ वृन्दाबन आये १३४ हरि लस घन वृन्दाबन देखी। सोबटैक चढ़ि गये बिशेखी॥ ध्यानमग्न करमैतिहि देखा। उतरि वृक्ष ढिगगये बिशेखा १३५ रोदन करि चरणन लपिटाने। स्नेहात्यंत माहँ अकुलाने॥ कहत भये तुम इतचलि आई। कटीनाक मेरी बिचभाई १३६ मारत बचन सकल हैं मोहीं। सकल कलंक लगावत तोहीं॥ अब घरको चलिये सुनि लीजै। रहि घरसासु भक्तिहरि कीजै १३७ कानन यह गंभीर महाई। कोऊ जंतुजोइ इतखाई॥ हमको दुखहोवै अतिभारी। मरत जियावहु मातु तुम्हारी १३८ करमैतीजी सुनिये बैना। उत्तर देतभई गुण ऐना॥ जासु भक्ति भगवत उरनाहीं। सत्यमृतक सम जानिय ताहीं १३९ जीवनकीआशा जो चाहै। भगवत भक्ति हिये अवगाहै॥ नाक कटीजो भाषी ताता। ताकी यह सुनिलीजै बाता १४० प्रथमहि सोन नाक हम देखा। नाक सु भगवत भजन बिशेखा॥ ता बिन नकटा कोटिन आहीं। शोचकरिय किन पितु मनमाहीं १४१ बर्ष पचाश भये तनुधारी। बिषय बिलास आश नहिं दारी॥ अब हूं मोह नींद सों जागो। बिषय तुच्छ गुनि हरिपद लागो १४२ भगवत भजन सार गुनि लीजै। तजि सबबृहीऔर मनकीजै॥

ऐसो सुनि उपदेश सुहावा। परशुराम अज्ञान नशावा १४३
जिमि तमहो सूर्योदय नाशा। नशै मोहहिय ज्ञान प्रकाशा॥
करमैती मन आनँद लीन्हा। भगवत मूर्ति तिनहिं इकदीन्हा
१४४ बिदा कीन्ह हर्षित घरआये। मूरति सिंहासन बैठाये॥
या बिधि तिनपद चित्तलगायो। तजि हरिभजन न दोसरभायो
१४५ आवन जान बोलबतरावा। सबतजि हरिपद चित्तलगा-
वा॥ कहदिनैक नृपलोगन पाहीं। परशुराम आवत अबनाहीं
१४६ ताके समाचार हैं कैसे। लोगन कहो रहत सो जैसे॥
राजा तिनकहँ बोलि पठायो। परशुराम तब बचन सुनायो१४७
नृपसों हमसों काम न कोई। करत करन चह नरतन जोई॥
ब्राह्मण हिये भक्ति असि देखी। अरु वैराग्य बिचार बिशेखी
१४८ दर्शन हित आपुहि चलि आयो। सांचीप्रीति देखि सुख
पायो॥ करमैतीजी को सुनि हाला। प्रेमबिकल भो नृपति-
हि काला १४९ दर्शनहित इच्छा मनधारा। पुनि अपने मन
कीन्ह बिचारा॥ मेरो भाग्य उदय जो ह्वैहैं। तौकरमैती जी इत
ऐहैं १५० देश पवित्रकरैं किनआई। कहि बृन्दाबन गे नरराई॥
करमैती के दर्शन कीन्हा। निश्चल भक्ति तासुलखि लीन्हा
१५१ दो० । नन्दनँदन महराजमें देखो दृढ़ विश्वास। बहुत
बारता करिसके चलन हेतनिजवास १५२ मनाकरत यद्यपि भई
तदपि नृपति गुण ऐन। कुंज कुटी बनवायऊ करमैती सुख
दैन १५३ करिदण्डवत सप्रेमनृप फिरिआये निजगेह। चरण क-
मल भगवतबिषे करतभये अतिनेह१५४ करमैतीजीकी कुटी ब्रह्म
घाटपर सोह। जियालाल याबिधि कथा मंगलसुखसंदोह॥१५५॥

नरसी जीकी कथा॥

सो०। नरसीजी महराज होतभये गुजरातमें। स्मार्त्त धर्म
शिरताज भगवत भक्ति न जानई १५६ चौ०। तिलक माल
धारे जिहि देखै। ताकी निन्दाकरै बिशेखै॥ सोई परम भक्तअस

भयऊ। हरि समीप कोटिन करि दयऊ १५७ शृंगारहु माधुर्य्य
उपासी। भेगोपिन सम प्रभा प्रकासी॥ भये काल बश मा पितु
जबहीं। आश्रय भाइ भवजभे तबहीं १५८ जूनागढ़ मन्दिर
छबि पावा। एक दिवस कर चरित सुहावा॥ खेलत बाहरसों
घर आये। भावजसों बोले श्रमछाये १५९ दे मोकहँ जल नेक
पियाई। सो बोली अति क्रोधहि पाई॥ करिलाये ऐसिही क-
माई। जो तुम को जलदेउँ पिलाई १६० नरसी को लज्जा अ-
ति लागी। गुनो जिन्दगी वृथा अभागी॥ शिवजी की सेवा
में आये। अहनिशि बिन जल अन्न बिताये १६१ तब शिव
जीने कियो बिचारा। परोआइ यहहमरे द्वारा॥ करत मनुष्यहु
रच्छाद्वारे। हमतौ हैं जगके रखवारे १६२ प्रगटि रूप निजदर्शन
दीन्हा। मांगहु चहिय जु कहिबे लीन्हा॥ नरसीजी सुनिबि-
नय बखाना। मैंबर मांगन को नहिं जाना १६३ आपु काहँहोवै
प्रिय जोई। दीजिय हमहिं कृपा करि सोई॥ शिवजीके चिन्ता
मनआई। जो मम प्रिय बेदांतन पाई १६४ पार्वती जानतनहिं
भेवै। सो कैसे मनुष्य यह लेवै॥ पुनि शंकर मन कीन्ह बिचा-
रा। याको हो परभाव अपारा १६५ तासों देश कृतारथहोई।
यह बिचारकरि शंकरसोई॥ नरसी सहित सखी वपुकरिकै। आये
बृन्दावन मुदभरिकै १६६ लखो रासमण्डल तहँ आई। कंचन-
मयसबभूमि सुहाई॥ रत्नजटित शोभा अतिराजै। जहँ अ-
संख्य गोपीगणसाजै १६७ गोपिनमध्य सिंहासनसो है।
देखत सुरनर मुनि मनमोहै॥ सिंहासनपर परम सुहाये। प्री-
तमप्रिया महा छबिछाये १६८ जिनशोभा परकाशं निहारी।
चन्द्रचांदनी काहबिचारी॥ रासबिलासहोत अतिनीको। जहँत्रि-
लोक सुखलागत फीको १६९ दोहा॥ कबहुँतालदैप्रियाजी प्री-
तमको समुझाव। प्रीतमकहु सांगीतगति प्रियाहेत सुखछाव
१७० नृत्यपरस्पर कहुँकरत गलबाहींदिसोइ। गानकरतकहुँ कर
पकरि मण्डल मधिगतदोइ १७१ चौ०। कबहुँअपरगोपिकन

साथा। गानकरत सुरनायकनाथा ॥ नाचत विचअंनेक बपु धारी। श्रीराधावर कुंजविहारी १७२ ठट्ठाहँसी करत कहुँराजैं। कबहूँबीन पखावज बाजैं ॥ बाजाबाजैं बिबिध प्रकारा। मिले तालस्वर सहित अपारा १७३ रागिनि छहोंराग सुखबाढ़े। सखीरूप सुन्दर तहँठाढ़े॥ नरसीजी यह देखि समाजा। भयेकृतार्थ रूप दुख भाजा १७४ शिवजीकी पुनि आज्ञा लहिकै। लगेमशाल दिखावनगहिकै ॥ ब्रजकिशोर कह प्रियहि बुझाई। आजुनवीन सखीयह आई १७५ तबहिं प्रियाजी कहो सुनाई। शिवजी साथ आजुयह आई ॥ नट नागर महराज कृपाला। कृपादृष्टि लखिभये दयाला १७६ नरसीजीसों कहो बुझाई। अबतुम जाहु भुवन सुखपाई ॥ जोइतमें देखो तुमआई। ताको ध्यान करहु मनलाई १७७ जब जिहिकाल बुलावो हमको। दर्शनदेउँ आइतब तुमको ॥ भगवतआज्ञा नरसीपाये। आनँद मग्न धिष्णनिजआये १७८ मन्दिरएक अलग बनवाई। ध्यान समाज करत मनलाई ॥ कीन्हविवाह विप्र इकआई। एकपुत्र कन्या द्वैजाई १७९ जगमें भगवत भक्तिपसारा। सेवासाधु करी सुखसारा ॥ अहनिशि भगवत भजन विनाहीं। दोसर काम कियो कछुनाहीं १८० तिनको चरितदेखि तिहिबारा। विप्रसजाति द्वेष उरधारा ॥ लगेशत्रुता करन अपारा। परकछु करि न सके तिहिबारा १८१ रूपसमुद्र मग्न हरिकेरे। कृपादृष्टि भगवत नितहेरे ॥ करिकछुसके न तातेलोगा। आयेसाधु दैवकेयोगा १८२ पूंछतभे सब लोगनपाहीं। द्वारावती जात हमआहीं ॥ साहूकार यहां है कोई। हुण्डी करै हमारी जोई १८३ मान भंग चाहत नर जोंई। करिकै हँसी कहतभे सोई ॥ नरसीजी हैं साहूकारा। प्रथमनकरि हैं अंगीकारा १८४ चरण पकरि लेहौ तुम जबहीं। हुंडी करहिं तुम्हारी तबहीं ॥ सुनिकै साधु तहां चलिआये। मुनिशांतमुद्रादै शिरनाये १८५ कहहुण्डी हमारि करिदीजै। ये तो सुयश जगत में लीजे ॥ कह नरसीसों

पैनहिं होई । जोरत भये हाथ सुनिसोई १८६ नरसीजी बिचार मन लाये । कोउ इनहिं बहकाइ पठाये ॥ अथवा भगवत रचा उपाई । शत्रुन उर प्रेरणा कराई १८७ ममहित खरच दीन पठवाई । हुण्डी लिखी तुरित सुखपाई ॥ साधुन सों बोलेसमुझाई । सांवल शाह नाम यह भाई १८८ तिनहीं के करमें यह दीजौ । बहुरि सप्तशत मुद्रालीजौ ॥ साधुगये द्वारकानुरागे । साहूकारहि ढूंढ़न लागे १८९ ढूंढ़त कतहुँ पता नहिं पाये । अति ब्याकुल पुरबाहर आये ॥ की भोजन करिआवहिं जाई । ढूंढ़हिंबहुरि साह को आई १९० सांवलशाह बिचारो मनहीं । कठिन खोज बिन लहै न हमहीं ॥ योगी यतन करत बहु हारे । तबहुँ न पाये दरश हमारे १९१ परजो अधिक कष्ट इन देहौं । तौ जगमें यह अपयश लेहौं ॥ नरसीजी जोसाहूकारा । ममगुमास्तगी को अधिकारा १९२ दो० । तांमें बट्टा लागिहै भगवत चित्त बिचारि । बड़ी पाग शिर धारिकै लम्बी धोती धारि १९३ साहूकारकरूपकरि कटि कसि कंचुक धारि । कांख बही लेखनि करन थैली कंधे डारि १९४ साधुटिके जहँवांरहे पूछत भे तहँ आइ । नरसीजी की हुण्डिका को लायो इतभाइ १९५ प्राण परे सुनि साधुतन बोले एकहिबार । महाराज लाये हमहिं ढूंढ़त भई अबार १९६ ढूंढ़त हारे करिकृपा मिले आप अबआइ । साह कहो किहि हेत तुम हमहिं लजावत भाइ १९७ ढूंढ़त हम तुमको फिरत गये कईदिनबीति । पता न लागो नगरमेंताकी है यह रीति १९८ सोईमोको जानई जो भगवत निज दास । यह कहि मुद्रा देतभे लैहुण्डी तिन पास १९९ पत्र लिखोसुखपाइकै नरसीजी हित सोइ । पत्री लै मुद्रादिये लिखो आपुनेजोइ २०० जानि गुमास्ता मोहिं निज लिखतरहब सब काल । यांत्रा करि साधूतहां जातभये पुनि हाल २०१ नरसीजीको पत्र वह देतभये तिहिकाल । साधुनसों कहतुमलखे सांवलशाह कृपाल २०२ चौ० । बोलतभे साधू सुखपाये । महाराज हमलखिकैआये ॥

रँगेप्रेम रँगनरसीजीसुनि। अङ्ग लगाइ मिलेसाधुन पुनि २०३ साधुन जब जानो यह हाला। रँगेप्रेमरँगभये बिहाला॥ सकल द्रव्य साधुन की जोई। सेवासाधु लगाई सोई २०४ कारण यह मन करि सन्देहा। साहूकार रुपैयाएहा॥ तिन ढिग पठवन चहिये सोई। तहँवांजाइ सकत नहिंकोई २०५ सेवासाधु सकत पहुँचाई। यह विचार नरसी मनआई॥ नरसीजीकी कथा सुहाई। अपरकछुक बरणौं सुखदाई २०६ बड़ी कन्यकाके सुत भयऊ। छूछकको सामान न गयऊ॥ सासु आदि गृहबनिता जेती। तनुजहि बोलीमारहिंतेती २०७ तब कन्या अतिहीदुख पाई। नरसीजी ढिगपठव कहाई॥ देत महादुख मोकहँ सासू। कुछदै सकियत लाइयआसू २०८ नरसीजी जबयह सुनिपाये। जीरण शकटचढ़े तहँआये॥ कन्यादेखि दशा कंगाली। बोलत भई वचन इमिहाली २०९ तुम्हरे पासरहै कछुनाहीं। तौआयेका गुनि मनमाहीं॥ नरसीकह्यो न चिंताकीजै। सासु आपनी सों कहिदीजै २१० छूछक सामादेहिं लिखाई। सोहम उनको देहिं मँगाई॥ सुनिकन्या वरणो सबजाई। सुनतसासु मनउठी रिसाई २११ नग्ररतमाम लिखी सबसामा। बस्त्राभूषण विविध ललामा॥ लैकागज्ञ सो कन्या आई। नरसीबहुरि कह्यो समुझाई २१२ घूमिपूंछि आवहु पुनिजाई। भूलोहोइ सुदेहिं लिखाई॥ तब क्रोधित लिखिदीन्हा सासू। दोपत्थरहु भेजिये आसू २१३ टूटोमन्दिर दीन्ह बताई। नरसीजी उतरेतहँजाई॥ उष्णतोय मज्जन हितभेजा। छुयोनजाइ अग्निसम तेजा २१४ भगवत तबहिं मेघ बरषाये। शीतलदेखि मंजि हरषाये॥ परदाडारि बैठ सुखपागे। भगवत कीर्त्तन करिबेलागे २१५ सहरुक्मिणी कृष्ण तहँआये। सब असबाबलिये सुखछाये॥नानाभरण वस्त्र समुदाई। भगवततिनहिं देतभेलाई २१६दो०। लागी पहिरौनीबटन ग्राम जनन सुखदाइ। जैसेनहिं आंखिनलखे पहिरतभे सुखपाइ २१७पत्थरद्वै पुनिदेतभे एक स्वर्ण इकरूप॥ नरनारी तिहिनगर

सजि धारोरूप अनूप २१८ छायो नरसीको सुयश नगर देश अरुग्राम ॥ अजहूँ साधु समाज में गावत सुयश ललाम २१९ एक नारिपायो कछु नाहीं। नाम चढ़ो नहिं कागज़माहीं॥ कहकन्या पोशाक हमारी। लीजै सो इमि कहा विचारी २२० जाके कर सबहीं ने पायो। लेहौं ताही हाथ सुहायो॥ कन्या उर संकोच बिचारी। नरसी हरि सुमिरे तिहिबारी २२१ ताहूको दीन्हो हरिदयऊ। कन्यादेखि महामुद कयऊ॥सबको सुखी कीन्ह पितु आई। कन्या फूलि न अङ्ग समाई २२२ पितुकी भक्ति देखि अतिसोई। तजिदीन्हे पति आदिक जोई॥ नरसीजीके साथ सिधाई। भगवत भजन लगीहरषाई २२३ दूजी कन्या ब्याह न कीन्हो। भगवत भक्ति माहँ चितदीन्हों॥ ऐसे नरसी चरित अपारा। जियालाल कहिलहको पारा २२४ नरसी जीकी कथा सुहाई। औरौ कहौं संत मनभाई॥ दोगाने वाले नर कोई। गावत फिरत नगर महँ सोई २२५ कौड़ी एक कहूं नहिं पाये। कोऊ नरसी नाम बताये॥ कहो कि उनघर जाहु सिधाई। तहां भली बिधि पावहु भाई २२६ सुनि कै तुरित तहां चलि आये। नृत्य गान करिबे मनलाये॥ नरसी कहो काह हम दीजै। हमहूं को फकीर गुनि लीजै २२७ भगवंत भक्ति चहिय तौ लीजै। और कछू निज चित्त न दीजै॥ सुनत कियो तिन अंगीकारा। मिले समाज माहँ तिहि बारा २२८ नरसी को मासूरह जोई। नृपमंत्री जूनागढ़ सोई॥ नरसीजी को शुभ आचारा। लखि मन में किय क्रोध अपारा २२९ पाखण्डी कहि नृपहि दृढ़ायो। चोपदार पुनि लेन पठायो॥ चले तुरित नरसी जी सुनि कै। कन्या गायकहू सँग पुनिकै २३० पहुंचे नृपति सभा महँ जाई। जासु तेज जनगये छिपाई॥ कोऊ कछू कहत नहिं भयऊ। पण्डित एक कहन इमि लयऊ २३१ सङ्ग राखिबो तरुणी केरा। लिखो कहां कहिये या बेरा॥ नरसी जीसुनि उत्तर दीन्हा। शास्त्र पुराण वेद लिखि लीन्हा २३२

जाउर भगवत भक्ति अनूपा। परम भागवत भगवत रूपा॥
नर नारी कोऊ किन होवै। निमिष संग कोटिन अघ खोवै २३३
भगवत श्रीमुख कीन्ह बखाना। मथुरा की नारी धनिमाना॥
तिनके पति बहुकरी बड़ाई। धन्यभाग तरुणी सुखदाई २३४
पढ़न हमारे को धिक्कारा। भगवत बिमुख सहत दुख भारा॥
धनि युवती हरिभक्तिहि पाई। हम ब्राह्मण गे मान बुढ़ाई २३५
लिखो भागवत में पुनिसोई। बड़ो मुक्तिलायक वह होई॥
सोसत्सङ्गी सेवा लायक। भक्तिहिये हरि जासु सहायक २३६
उद्धव सों भगवत कह सोई। श्वपचहु भक्त बड़ो मम होई॥
ऊंचो कुल लघुभक्ति बिहीना। दिनमणि बिन दिन यथामली-
ना २३७ पुरुष न पुंसक नारिकुजाती। उर युत भक्ति श्रेष्ठ सब
भांती॥ पण्डित खण्डित भक्ति बिहीना। सब गुण तुच्छ न हरि
पदलीना २३८ कीन्ह निरुत्तर सभा सयानी। नृपसों कहो
बिप्र इक बानी॥ नरसीजी परताप अपारा। सुनो लखो हम
बारहिबारा २३९ सुनत भूप मन निश्चय आई। चरण परे
नरसी के जाई॥ बहुरि भुवन निजगये लवाई। आश्वासकी-
न्हों हरषाई २४० नरसीजी पुनि आनँद पाये। बिदामांगि नृप
सों घर आये॥ भगवत के पूजन में लागे। सुमिरण भजनक-
रत सुखपागे २४१ गावत राग किदारो जबहीं। भगवत हों
प्रसन्न अति तबहीं॥ माला देत गले निज तिनहीं। परोप्रयो-
जन इकदिन इनहीं २४२ सो०। साधू सेवा हेत गिरों कि-
दाराको धरो। कहतभये मुदसेत अहै न मुद्रा गाइ हैं २४३ अ-
रिबह कायो तत्र भूपहिं अवसर पाइकै। लेहु परीक्षा अत्र नर-
सीजी झूठे भगत २४४ दो०। कच्चे धागा पोहिकै हरिहिमाल
पहिराव। टूटिपरत है भारसों हरिदीन्ही कहिगाव २४५ भूप-
ति मनभाय बचन तत्क्षणलियो बुलाइ। सूत्र रेशमी दृढ़गुही
माला हरि पहिराइ २४६ पुनि नरसीजी सेइबिधि कहत भये
नरनाह। मालातुमको देत हरि हमहूँ देखन चाह २४७ सुनि

नरसीजी बचन नृप लगे करन हरिगान। केदारा गाय्यो नहीं नदी माल भगवान २४८ तब नरसीजी कहत भे हौ आखिरि तुम ग्वाल। एक किदाराके बिना देत नहीं यहमाल २४९ विष्णु अहैं धनि जगत में पालत दास समाज । गही कृपणता देत नहिं माल न आवत लाज २५० तरफ दोसरी होनहू देतन छबि दरशाइ। बश अधीन करि लीन्ह निज अंग अनूप लखाइ २५१ कौन हमारिहानि है लगिहै तुमं-हिं कलंक। बोली मारन बचन ये सुनतभये हरिबंक २५२ करिवपु नरसीको तबै गेघर साहूकार। साहरहो सोवत तबहिं बोले बचन पुकार १५३ मुद्रा आपन लीजिये कहो नींदवश शाह। ममनारी को दीजिये लिखनो लीजिय ताह २५४ गये देखि बड़भागिनी नमीजन्म फल लेखि। लै मुद्रा लेखनदयो भोजन दियो बिशेखि २५५ कारण यह दर्शनलहे नारीसाहू-कार। नरसीजीसों माँगियो प्रथमहिं सो सुखसार २५६ दर्शन हमहिं कराइये दीन्हो बचन बिशेखि। बचन सत्य प्रभुकरत भे दास लाजको लेखि २५७ केदारा गावतभये नरसीजी तिहि काल। कागज्ञ डारो गोदमें ताहीक्षण नँदलाल २५८ अति हरषित नरसी भये कीन्हो अधिक अलाप। कर उठाइ पहिराइ-यो मालाहरि उरआप २५९ चौ०। लखिजन जयजयकार प्रका-सा। राजाउर भो दृढ़ बिश्वासा॥ चरणन परत भयो पुनि आई। दुष्टनके लज्जा उर छाई २६० पुनि बिश्वास सबन उर भयऊ। भगवत की शरणागत लयऊ॥ यह नरसीजी कथा सुहाई। जियालाल बरणीसुखदाई २६१ दो०। कन्याको बर ढूंढ़िबे चलो एकबर बिप्र। रुचि अनुकूल न पाइयो जूनागढ़गो छिप्र २६२ कोऊ दीन्ह बताइकै नरसीजीको पुत्र। रूपगुणन युत ब्याहिये अनत जाहुगे कुत्र २६३ बिप्रतहां वह जाइकै सुन्दर बालक देखि। अति प्रसन्न मनहोत भो कीन्हो तिलक बिशेखि २६४ कहनरसी कंगाल हम धनीढूंढ़ते कोइ। बिप्रबड़ा

ईकीन्ह सुनि बिनय कियो पुनिसोइ २६५ बिप्र तुरित पुरजाइ कह कन्या पितुसों बैन । नरसीजीके पुत्रको कीन्ह तिलक गुण ऐन २६६ नाम सुनरसी को सुनत कीन्होब्राह्मण क्रोध । टीका लाइय फेरिकै होतनहीं ममबोध २६७ कहत बिप्र नहिं घूमि है आये तिलक चढ़ाइ । लेहुअंगुली काटिचह गोसम्बन्ध हढ़ाइ २६८ मानस कन्या पितुकहो यह कन्या को भाग । दा. यंज पूरण देहिंगे जाइशोचको दाग २६९ आव समीप बिवाह दिन लग्नपत्रिका तत्र । ब्राह्मण दियो पठाइ कै नरसीजी घर यत्र २७० लहि नरसी बिस्मय रहित दीन्हो कतहूँ डारि । चर्चा हू कीन्ही नहीं रहे ब्याह दिन चारि २७१ कार्य सवाँरन ब्याह के कृष्णरुक्मिणी संग । नरसी घर आये लिये ऋधिसिधि पूर- ण अंग २७२ नारी कारज रुक्मिणी सजत महासुख पाइ । नरसीजी कारजसकल कृष्ण सवाँरेआइ २७३ मिष्टान्नहु पकान्न- हू होनलगे सबठौर । बाजाबाजे गानहू वैवाहिकभो और २७४ बालक मुखमण्डन कियो श्रीरुक्मिणि निजहाथ । अश्वचढ़ा- वत पुनि भई कीन्हे सेवकसाथ २७५ कीन्हे नानादानतहँ नेग- चार सुखपाइ । रथ पालकि गजसजि चली पुनि बरात हरषाइ २७६ भगवत यां बिधि कहत भे गहि नरसी को हाथ । कारज करहु बरात चलि गुप्तरहहिं हम साथ २७७ सुनि नरसीजी कहत भे मैं नहिंजानौं एह । जानौं कीर्त्तन रावरो मनबाणीयुत नेह २७८ सुनि भगवत अधिकार सब धारण कियो बरात । समधी नगर समीप पुनि पहुँचत भे सुखदात २७९ प्रथमहि सो पठवत भयो समधी लोगन तत्र । बालक कछुक बरातसह होवै लावो अत्र २८० लोगन पूंछोजाइतहँ काकी अहै बरात । नरसीजीकी जानिकै आवतभे हरषात २८१ आइ तुरित लो- गन कहो सुनि लीजै महराज । घनी बरातन असि लखी जसि देखी हमआज २८२ लोगन सों सुनि कहत भे हँसी करत किमि अत्र । टीका बिप्र चढ़ाव जो ताहि पठायोतत्र २८३

लखि बरात सो बिप्रबर कहो हर्षयुत आइ। अश्वन घास न दै सकत असि बरात रहि छाइ २८४ सुनत बिप्रबरके बचन सूखि गयो सो तत्र। कछु सामान न कीन्हहम करहिं कहा अब अत्र २८५ परत भये ब्राह्मण चरण तुमराखो अबलाज। बहुरि बिप्रसह जाइकै देखे सकल समाज २८६ चहूं ओर लखि परत है अति बरात बिस्तार। गर्वदूरितिनको भयो खोइ गयो अहँ-कार २८७ बिनयबिप्र की पुनि करी सोलै नरसीपास। गयो देखि चरणन परे कहि चरणन की आस २८८ हाथ जोरिबिन-ती करी तुम राखहु निज हाथ। हाथ पांव मम थकिरहे लखि बराततब साथ २८९ उठि नरसी जी मिलत भे। लीन्हों अंग लगाई। अमित कृपा पुनि करि तहां दीन्हों हरिहि मि-लाइ २९० दोऊ राखहि लाज ए पुरुष बिराजत अत्र। कछू शोच नहिं कीजिये ए राखत सर्वत्र २९१ एनरसी जीके ब-चन सुनत गये निज भौन। चली बरात समुंद्रवत तिन घर कीन्हों गौन २९२ भगवत दोनों ओर के कारज किय सुख सार। भो बिवाह अति धूमसों छायो यश संसार २९३ भगवत जनको चरित यह वारिधि सरिस अगाधु। जियालाल किमि कहि सकै अति मति मन्द असाधु २९४ छन्ददोवै। पत्री भू-मि नील गिरि मसि करि वारिधि पात्र बनावै। पारजात संता-न शाख की निज कर लेखनि लावै॥ लिखि शारदा शेष सब कालहु कोटिन जन्म गवाँवै। जियालाल महिमा संतन की तदपि पार नहिं पावै २९५ कहत बनत नहिं सुनत बनत नहिं समुझत में वह आवै। जबहीं समुझ आइ मन भासै ज्यों की त्यों रहि जावै॥ लवण पुतरि चलि सिंधु थहावन पधिलि तहां रहि जावै। जियालाल इमि सुरति समानी कहिबे में नहिं आवै २९६ ऐसो है संतन निर्मल कहा कौन पै जाई। तीनि देव न-हिं सूरसोम नहिं ज्योति जहां नहिं गाई॥ जीव तत्त्व नहिं नि-राधार नहिं निराकार श्रुति गावै। जियालाल इहि मति को

जानै बहुरि नया जग आवै २९७ निराकार बिच निराधार है तामें ज्योति समाई। निराधार के रोम रोम महँ कोटिन अगड महाई॥ अगड अगड में अमित लोकहैं शोभा कही न जाई। सकल भेद यह लखत संत जन जियालाल कह गाई २९८ दो०। या विधि संतन गति निरखि पंगु होत बुधि धीर। जियालाल कछु भाखियो यथापढ़ायो कीर २९९ द्वारावति भगवत गये नरसीजी निजगेह। सदा भजन भगवतकरत धारिहिये निज नेह ३००॥

हरिदास जीकी कथा॥

दोहा। कथा स्वामि हरिदासकी अब बरणौं या ठौर। सब शृङ्गार ऊपासकन होत भये शिर मौर ३०१ उनहिं जैसि दृढ़ धारना उपासना के माहिं। तैसी वर्णन करतमें सुकबि मती ठहराहिं ३०२ सखी भावना में निपुण प्रीतम प्रिया समाज। नित्य बिहारहि में रहत रसभक्तन शिरताज ३०३ बसो जासुरसना विषे भक्ति प्रताप अनूप। कुंज बिहारी रटरहत हिये ध्यान हरिरूप ३०४ प्रगट भक्तिपरताप यह देश देश के भूप। खड़े रहत. जिन द्वारपर दर्शन हेत अनूप ३०५ भोग लगे पीछे अशन मर्कट मोरन देत। नट नागर महराज जिहि तेतिन हँसत सहेत ३०६ कीर्त्तन विद्या गानमें जिन सन्मुख नहिं और। गन्धर्बहु लज्जित रहे जेगायक शिरमौर ३०७ एक समय यमुना पुलिन बैठेस्वामी यत्र। शीशादीन्हों अतरलै कोऊ सेवक तत्र ३०८ लै शीशा सोरेतमें दीन्हों तत्क्षण डारि। दुखित भयो सेवक लखत मनमें कहो विचारि ३०९ जानो नायातैल को गुण नहिं कछु मर्य्याद। स्वामी तामन गति निरखि बोले युत आह्लाद ३१० दरश बिहारीलाल के तुमकरि आवो जाइ। सो सेवक सुनतहि चलो गो मन्दिर में धाइ ३११ अतर सुगन्धित भवन लखि पुनि दरशन हरि कीन्ह। भीगे अंशुक अतरसों अंग सकल लखि लीन्ह ३१२ ता

के भो विश्वास उर लज्जा पाई तत्र। शीशा फेकों अतर को यह कारणहै अत्र ३१३ ताक्षण श्री हरिदासजी ध्यान मग्न हरिसंग। होरी खेलत रंगहरि डारो तिनके अंग ३१४ ताच्चण शीशा अतरको आयो इनके हाथ। हरि ऊपर डारत भये पूज्यो तिनको साथ ३१५ एक समय कोऊ पुरुष आयो तिनके पास। पारस मणि लै भेंट दिय शिष्य होन की आस ३१६ छन्दरामगीतिका। पारस मतिहि प्रीति भारीदेखि स्वामिबिचार। प्रिया प्रीतम प्रीति किमिहो पार्स में मति धार॥ कहो पारस डारि आवहु यमुनजी में एह। डारिदीन्हों जाइ यमुना सुनत गुरुके नेह ३१७ करत मनमें शोच पर यह पार्सरह तोपास। सकल हरि शृंगार सेवा साधुहोत प्रकास॥ जानि यहं हरिदासमनकी गई ममता नाहिं। हेतु याही संगलै तिहि गयेकानन माहिं३१८ बहुतपारस तहँ लखाये कहत भे पुनिं बैन। स्वाद अरु ऐश्वर्य्य तीनहु लोक जो गुण ऐन॥ प्राप्त भगवत पंथके ठग जानिये सब सोइ। खैंचिमनसब ओर सों हरि चरण जबरति होइ ३१६ प्राप्त परमानन्द भगवत होत है तिहि काल। खैंचिबो चहुँओर सों मन चाहिये यहहाल॥ होम पारस प्रीय तौलै लेहु चाहौ जेत। सुनतसेवक बचन याबिधि परो चरण सचेत ३२० दो०। मनहिं कियो एकाग्रसो भगवत पद चितलाइ। सुमिरनकीर्त्तन में लगो सब जग जाल बहाइ ३२१ छन्ददोवै। अकबर बादशाह इकअवसर तानसेन से पूछा। बिद्या गान तुमारा गुरुको कहो सत्य नाहिं छूछा॥ तानसेन कह गुरुहमारे स्वामीहैं हरिदासा। बादशाह दर्शन करिबेकी करत भये मन आसा॰ ३२२ संग सिधाये तानसेन के दर्शन कीन्हे आई। तानसेन पद एकसुनायो जान बूझ बिलगाई॥ सोईपद स्वामीने गायो तानपूर करधारी। भगवत रूप भये लयश्रोता सभा भई बशसारी ३२३ अकबर शाह आइ डेरेपर फिरिवह राग गवायो। तानसेन गावतभे तबहीं पर वह रस नहिंआयो॥ बाद शाहपूछतभे कारण

तानसेन कह एहा। सब जग स्वामी पालन हारा तौमुखगाव सनेहा ३२४ गावतहैं हम सौंहँ तुम्हारे सरवरिहोवै कैसे। जान-तभेये सही बचन जो तानसेनकह ऐसे॥ बिदासमय स्वमी सों भाखो बादशाह शिरनाई। आज्ञा कछु हमहूंको होवै सदाकरौं सिवकाई ३२५ कीन जबहिं हठस्वामी तब ब्रज दिब्य भूमिदर शाई। परो चरण कह योग्य यदपि नहिं करौं स्वल्प सिवकाई॥ चणक दीजिये नित्यमर्कटन कहस्वामी इमि बैना। आपुनअब कबहूं इतआवैं ब्रज तरु कौकाटैना ३२६ आज्ञापालन करत भे स्वामी के सुनिबैन। बादशाह त्रयत्रचनदै जात भये निजऐन ३२७ याबिधि श्रीहरिदासकी कथा महा मुदमूल। जियालाल बर्णन कियो दारकसंसृति शूल ३२८॥

रत्नावली जीकीकथा॥

चौ०। कथा रत्नावलीकी यह शुभग बर्णत सोइ। भक्ति अरु शृंगार रस में रहीएकहि जोइ॥ प्रीति पति सों खैंचि भग-वत मध्यप्रीति बढ़ाइ। भयोनहिं चल चित्त जिहिबिश्वास दीन्ह दृढ़ाई ३२९ मेर अभिपति मानसिंह सुसिंह माधव यस्य। बंधु लघुरत्नावली रह धन्य रानीतस्य॥ सखी एक सुतस्य भगवत भक्तिमें लवलीन। ब्रजविहारी मदन मोहन नामजल रहु मीन ३३० भरत अँशुआ प्रेम के हरिनाम कहि परबीन। नाम सुनि सहप्रेम रानी सखिहि पूछन लीन। नाम बारहिंबार काको प्रेम युत तूलत। खींचतो मनमोर तादिशि कहहि हेसखि हेत ३३१ कहसखी सोहागमें लवलीनरहिये आप। प्राप्त रत्नअमोल मोको भक्तहरि परताप॥ भयोरानी के हिये सुनि प्रेम अद्भुत तत्र। कहहु का बिधि मिलहिं हेसखि मोहिं मोहन अत्र ३३२ लखि सहेली चित्त या बिधि रानिको तिहिकाल। चरित भगवत के सुनाये मोहदारन हाल॥ रसिक जे शृंगार रसके भक्त भे सुखदान। कथा तिनकी कहि सुनाई भक्तिवर्द्धक

जान ३३३ गुरुसदृश तिहि जान रानी चित्तआनी बात। प्रेम संयुक्त चरित भगवत सुनतसो अहरात॥ भई दर्शन चाहबोली सखीसोंइमि बैन। होइँ भगवत दरश जा बिधि कहिय सो गुण ऐन ३३४ मदन मोहन रूपमेरे चित्तगयो समाइ। सुनतरानी के बचन इमि कह सहेलि बुझाइ॥ दरश ताके कठिनमिलिबो कहसहेलरि बैन। सहत कठिन कलेश जाहित सिद्ध ऋषि गुण ऐन ३३५ मिलत सोनहिं मिलतहै वह प्रेमसों सुखदान। करहु अंगीकार भगवत भक्ति भाव अमान॥ नीलमणि हरि रूपरानि बिराजमान सुकीन। भोग अरु शृंगार नाना भाँति सों चित दीन ३३६ अल्प दिनमें स्वप्नमें हरि दरश होने लाग। बात चीतहु होन लागी बढ़ी अति अनुराग॥ योग जप मख दान करिकै कोटि जन्म न होइ। प्रेम की कछु राह न्यारी होत क्षणमें सोइ ३३७ दरश होवैं प्रगटमोको चहो जीमें एह। सखी सों वह बात बर्णन कीन्ह सहित सनेह॥ कहो सखि निज महलके ढिग रचहु मन्दिर एक। सावधान मनुष्य राखौ धारिउर दृढ़ टेक ३३८ साधु भगवत भक्त मन्दिर लै टिकावैं तत्र। भोजनादिक सकल सेवा होइ सुनिये अत्र॥ बैठिपरदे मांझ दर्शन कीजिये सुखपाइ। दरश होवैं ब्रजकिशोर कि यह उपाय लखाइ ३३९ सुनत रानी सोइ करिकै भई सेवा लग्न। एक दिन ब्रज साधु आये युगुल मूरति मग्न॥ थकित रानी सुनत बानी भई दर्शनपाइ। कौन अंगहै योग्य लज्जा देहु सखीबताइ ३४० सकल अंगसमान मोकहँ लखि परतहै वीर। रूप भगवत सार आनंद मग्न होवै धीर॥ यहीसार असार सबहै भाखि या बिधि रानि। निकरि साधुन तीर आई गहेपग छबिखानि ३४१ दीनता अरु बिनय संयुक्त दिये भोजन सोइ। बिनय कीन्ही करहुँ सेवा जौन आयसु होइ॥ वह दशा तिहिप्रेमकी करिसकै बर्णन कौन। हाथ सोनेथार सबको दीन्ह भोजन जौन ३४२ पान दिय अरु चरणचापे लाज परदा खोइ। प्रेम बिह्वल भये

लखिकै प्रेम रानी सोइ । बात फैली नगर में सब लोग दे-
खन आव। रह मुसद्दी महल परसों नृपहि लेखि पठाव ३४३
भईं निर्भय रानि बैठत मुण्डियों के साथ। सुनत यह बृत्तान्त
अतिशय क्रोध किय नर नाथ॥ प्रेम सिंह सुकु बरतब लागि आ
व बन्दन तत्र । तिलक माल बिलोकि लोगन कहो नृपसों
अत्र ३४४ क्रोध संयुत बिहसि भूपति कहो मुण्डी पुत्र। समुझि
कै यह बात नृप सुत लहन आनँद कुत्र॥ मातु को लिखि पठै
दीन्हों कहो भूपति जौन। भई मुण्डी आजते हम लिखो उत्तर
तौन ३४५ बहुरि मुण्डन शिर करायो अतर तैल समेत। साधु
सेवा करन लागी धारि उर अति हेत॥ छांड़ि दीन्हों महल जै-
बोरहनलागी तत्र। साधु सेवा होतहै जहँरहत साधू यत्र३ ४६ कुअँर
सुनि कै लह्यो आनँद दिये सबन इनाम। नौबतिहु बजवाव ताके
भये पूरण काम॥ नृपति लोगन सों कह्यो यह काह कारण अत्र।
सकल सो बृत्तान्त लोगन् कहो नृपसों तत्र ३४७ बधन हित
सुत नारि माधव सिंहकीन्ह उपाइ । भये आपु सवार औरौ
दल लियो सजवाइ॥ प्रेम सिंहहु आइयो पुनि लड़न हित रण
भूमि। होन कड़खा तत्र लागे चले भट्रण झूमि ३४८ लखो
मंत्रिन होत अनरथ अग्र आये धाइ। पुत्र सों नहिं युद्ध करिये
कहत भे समुझाइ॥ जगत में तव होइ अपयश भाखिगे पुनि
तत्र। प्रेमसिंह नरेश अंगज खड़ो उद्यत यत्र ३४९कहतभे समु-
झाइ बोले कुँवर तिनसों बैन। नृपति सों हम करहिं संगर नेक
भय कछु हैन॥ भोगहेत शरीर कोटिन धरेनशिगे तौन। एक
तन यह जाइ भगवत मार्ग संशय कौन ३५० सुनत मंत्रिन बि-
नय संयुत चरण पकरे तासु । प्रेमसिंह नरेश को सुत कहत भो
इमि आसु॥ प्रथम माधवसिंह तजि संग्राम को घर जाहिं।
जाहिं गे रणभूमि को तजि कछू संशय नाहिं ३५१ गे रजनि
में प्रथम घरको सिंहमाधव तत्र। ब्याघ्र छोड़ो क्रोध संयुत रहत
रानी यत्र॥ सभय जन रनिवास बोले आव नाहर एह। उठी

करि भगवान सेवालखि कह्यो युतनेह३५२ नहीं नाहरआवईनर
सिंह आये अत्र। भाखि इमि युत प्रेमपूजन करन लीन्होंतत्र॥
नाहरहिके रूपमें नरसिंहप्रगटे आइ। करन लागी देखि अस्तुति
हिये आनँद पाइ३५३धनि अहैममभाग प्रगटेआइ रूप कराल।
जौन भयकृत रूपदेखत भये असुर बिहाल॥ जबहिं जनप्रहरा-
द को दुखदेत भो असुरेश। फारिखंभ कराल प्रगटे रूपतौने
देश ३५४ गरजशब्द कराल सुनिकै चौंकि यो दिगपाल।
भयो खलभल शब्द वारिधि भूमि भूधर चाल॥ गिरे योधा
भूमि लखि नरसिंह कठिन कठोर। सटकभटभट खटकहि यमें
शब्द गरजनि घोर ३५५ छन्द मनहरण। दशन कराल काल
ग्रसन जगतजनु कसन बिलोकि शत्रुबसन भुलावई। रसन
कराल लाल कैधौं कर बालकाल प्रगटीसुमेरु ज्वाल जालभय
आवई॥ अरुण नयनसम तरणि किरणजूह छायो है सभा
समूह बिज्जुल पकानसी। कैधौं है कराल बान ग्रसो शत्रु सभा
जान पलक लगन पंचभृकुटी कमानसी ३५६ दो०। ऐसो जो
प्रकटो वपुषदास राखिवे हेत। सोई आजु त्रिलोक में नरहरि
कृपा निकेत ३५७ याविधि पूजन पाइकै नरहरि कियो विचार।
कछुक काम दरशाइये कूदिगये नृपद्वार ३५८ बिमुखन हरि
मारत भये आरत रच्छा कीन्ह। रानि प्रताप लखाइकै निज
मारग पुनि लीन्ह ३५९ माधवसिंह नरेश के निश्चय आई
आसु। सविनय रानी ढिग गयो परो चरण में तासु ३६० परम
सखीकह नृपति जी परेचरण में आइ। परैंलालजीकेचरण कह
रानीसुखदाइ ३६१ एक दृष्टिसों देखिये कहोसखी सुनि बैन।
या विधि सुनि ताके बचन कहरानी गुण ऐन ३६२ एक तरफ
लागी नजर होइनदूजी ओर। या विधि सुनि रानीबचन बोले
नृपति निहोर ३६३ सकल अहै यह आपका माल खजाना
जौन। भगवत सेवा में मगन दियउत्तर नहिं तौन ३६४ भूपति
माधवसिंह अरु मानसिंह नरवीर। सरिता एक गँभीरखड़ि पार

जात रणधीर २६५ तरी मग्न होनेलगी बेवश भयो मलाह।
मानसिंह कहकरियका दीजिय कछू सलाह ३६६ माधवसिंह
नरेश ने रानी भक्तिसुनाव । ताही को सुमिरन लगे पारगई
द्रुतनाव ३६७ या बिधि रत्नावलि कथा जियालाल है एह।
अचल विष्णुपद दायिनी हरिपद दायकनेह ३६८ ॥

निषादकी कथा ॥

दो० । कथा शुभग नीषादकी शृंगबेर पुरबास । दशरथ
आयसु रामजब जातभये बनबास ३६९ चौ० । आवत रामदास
सुनिपायो । सह परिवार अग्रचलिआयो ॥ चरणनपरो दण्डवत
भाई । लखोरूप इकटक चखलाई ३७० सुनि बृत्तान्त दुखितभो
नारी । रघुनन्दन की ओर निहारी ॥ बिबिधि भांति सेवा पुनि
कीन्हा । कन्दमूलफल लै सो दीन्हा ३७१ चले चित्रकूटहि प्रभु
जबहीं । संगहिचलो निषादहु तबहीं ॥ पुनि रघुनन्दन आयसु
पाई । घूमतभयो दूरपहुँचाई ३७२ दो० । जबहिंचले रामहि
मिलन भरत नगर नर नारि। देखि निषाद अपारदल चलनिज
कटकसवांरि ३७३ चौ० । मानस या बिधि करीबिचारा । आये
सदल भरत इहिबारा ॥ रामगये काननहिं सिधारी । अबका
आये चित्तबिचारी ३७४ चाहतराज्य अकंटक कीन्हों । शिक्षा
मातुहिये जनुलीन्हों ॥ जिमिचह गहन अकाशहिकोई । बिय
तनि चोरिचहत जलसोई ३७५ जीवत गज गजमुक्ताचहई।
जीवत सिंहमुच्छ चहलहई ॥ सती अंग आलिङ्गनचाहा । जी-
वत उरगचहत मणिलाहा ३७६ जीवत बीर शीशचह जैसे।
बांधनरज्जुसमीरहितैसे ॥ व्योमअन्तचाहत जिमिकोई । तिमि
अभिलाष भरतमनहोई ३७७ उदय सूर्य्य पश्चिम किनहोवै ।
बांझनारि सुतमुख कोजोवै ॥ बिना नयन बरु लिखै पुराना।
गूंगा करै बिबिधि बिधिगाना ३७८ श्रीगंगा पश्चिममुख बहई।
माथिफीलाल कोउ घृत लहई ॥ चलै मेरु शीतलशिखिहोई ।

पंगुलांघ गिरिसंकुलकोई ३७९ जामहिं शृंग शशाकैं शीशा। परनहिंहोहिं भरतअवनीशा॥ रामक्रोध पावक बिकराला। होवे सैन शलभकीमाला ३८० कुमति धारि आये मनमाहीं। लांघनदेहुँ गंग में नाहीं॥ आयुधपात देह निजलेहौं। जीवत अग्र जाननहिं देहौं ३८१ समर सरोष तजौं शरनाना। रामहेत त्यागहुँ रणप्राना॥याबिधिकरि बिचार मनमाहीं। आवतभयो भरतदलपाहीं ३८२ भरत भक्ति सुनि लोगनपाहीं। जातमनाः वनहैं बनमाहीं॥ हर्षितभयो निषादबिशेखी। आनँदलहो भरत कहँदेखी ३८३ रामबियोग शोकउरजिनके। बदनमलीन मान गत तिनके॥ देखि निषाद विषाद समेता। दण्डाकार परो गतचेता ३८४ दो०। भरत जानि रघुबरसखा धाइलीन्हउरलाइ। मिले परस्पर दोउ जन प्रेम न हृदय समाइ ३८५ चौ०। भरतनिषाद काहँ जब देखा। पायो परमानन्द बिशेखा॥ बूड़त राम बिरह बारीशा। पठयो पोत मनहुँ जगदीशा ३८६ निर्द्धन कोउ यथा धन पावै। क्षुधित सुअन्न यथा रुचि लावै॥ कुशल प्रश्न पूंछा बहु भांती। निर्भर प्रेम न हिये समाती ३८७ चलो निषाद भरतके संगा। दर्शन हेत राम रण रंगा॥ जहँजहँ राम बासबन कीन्हा। भरत समेत जाइ लखि लीन्हा ३८८ बनचर कोल भील दरशाये। कुश साथरी देखि दुख पाये॥ पहुँचे चित्र कूट इमि जाई। रामहिं लखितन दशा भुलाई ३८९ भरत भूमि रामायसु आये। निज घरगे निषाद दुखपाये॥ जबलागि राम भूमि नहिं आये। तबलगि रहे महा दुख छाये ३९० आये लंक जीति जब रामा। दरश पाइ पूरण भे कामा॥ रूपं मनोहर मानस धरिकै। रहत भये मन्दिर मुद भरिकै ३९१ कथा निषाद महासुख सारा। वर्णन कीन्ह कबिन बिस्तारा॥ तातें यह हरि जन यश गाना। जियालाल संक्षेप बखाना ३९२॥

बिल्वमंगलकी कथा ॥

चौ०। कथा बिल्वमंगल की एहा। बरणौं दायक हरि पदनेहा ॥ बेणा कृष्ण नदी के तीरा। वासस्थान विप्र बरधीरा ३९३ बारमुखीं चिन्तामणि नामा। तासँगरमे भूलिसब कामा॥ एक दिवस कर चरित सुहावा। श्राद्ध दिवस पितु को चालि आवा ३९४ कीन्ही श्राद्ध जिमाये विप्रा। लखि अल्पाह चलत भे छिप्रा॥ सरिता पार बिलासिनि धामा। निशि में सरितट गये सकामा ३९५ बाढ़त देखी नदी अपारा। उडुपन लखी तहाँ तिहि बारा॥ मिलन हेत बाढ़ो अति नेहा। कूदे नदी छांड़ि सन्देहा ३९६ कछुक दूरि पैरे खरधारा। बहत जात शव अग्र निहारा॥ जानत भे आई यह नावा। चिन्तामणि मम हेत पठावा ३९७ तापर हरषित भये सवारा। पहुँचत भये जाइ वा पारा॥ विह्वल उतरि मिलन हित धाये। गणिका द्वार शीघ्र चलि आये ३९८ अर्द्धरात्रि तहँ बन्द कपाटा। मन्दिर जान लखी नहिं बाटा। उरग एक लटकत लखि पायो॥ जानो मित्र डोरि लटकायो ३९९ पकरि सर्प छतऊपर आये। आंगनजान मार्ग नहिं पाये॥ कूदि परे ऊपरसों तहँवां। जागे लोग शब्द सुनि जहँवाँ ४०० वेश्या बिल्वमंगलहि जाना। अंशुक दिय कराइ अस्नाना॥ पूँछा बहुरि कि विधि चलिआये। तासों सब वृत्तान्त सुनाये ४०१ तुम पठई सरिता परनावा॥ ऊपर द्वार डोरि लटकावा॥ ताही को गहि के इत आये। कहिछाति जाइ बहुरि दिखराये ४०२ देखो चिन्तामणि तिहि काला। लटकत आशीबिष बिकराला॥ करिकै क्रोधकहो तिन पाहीं। ऐसे भूलि गये मो माहीं ४०३ यह शरीर है सदा असारा। विष्ठामूत्र रुधिर मल भारा॥ अस्थि मांस मज्जामय जोई। कफ पित स्वेद लार युत होई ४०४ तामेंकीन्हों प्रेम्र महाना। ऐसे भजिय न किमि भगवाना॥ करुणा मय सुन्दर सब लायक। श्री राधावर जन सुखदायक ४०५

अब भजिहौं मैं तौ नँदलालहिं । यशुमति नन्दन खल बल
सालहिं ॥ भावै तुमहिं तौन अब कीजै । मोसों नेह छांड़ि अब
दीजै ४०६ बीती राति इबिधि बतराता । निज निज मगगे
होत प्रभाता ॥ शोभाधाम रूप हिय धरिकै । जिह्वारटत नाममुद
भरिकै ४०७ दो० । बहुरि सोम गिरिशिष्य भे माध्व संप्रदा
माहिं । इमि श्रीमंगल बिल्वजी हरिउर धरे सदाहिं ४०८ चौ०
बृन्दा कानन दरशन हेता । प्रेमातुर पुनि चले सचेता ॥ पहुँचे
एक नदी तटजाई ॥ नारी मज्जत परी लखाई ४०६ तामें
नारिएक छबि धामा । एदेखत ही भेबशकामा ॥ जबहीं मज्जि
चली वहनारी । ताके पीछे चले सिधारी ४१० नारी जातभई
गृह माहीं । एठाढ़ेतिहिद्वारतहाँहीं ॥ तापति भक्त रहोसो आंयो ।
द्वारेपर इनको लखि पायो ४११ निजयुवती सों पूंछन लीन्हा ॥
सोतौ सकल हाल कहि दीन्हा ॥ भगवतभक्त जानि सुखपा-
यो । द्वार आइकै बिनय सुनायो ४१२ मोपर कृपा कीन्हअति
भलिकै । भवन पवित्र करिय अब चलि कै ॥ हरिजन जासु
भवन नहिंआवैं । तिन मन्दिर शोभा नहिं पावैं ४१३ यहक-
हि मन्दिर गयो लवाई । दीन्ह अटारी तिनहिं टिकाई । बहुरि
आइ युवती सों भाषा । पूरण करहु साधु अभिलाषा ४१४
जाइय शुभ शृंगार सवांरी । सेवाकरव बिबिधि बिधि सारी ॥
सो सुनि कै अति हर्षितगाता । गई सथारासनसुखदाता ४१५
लखी बिल्व मंगल इहि भांती । तिनकी भक्ति भक्त सुखदाती ॥
मनको रोकि बिषय सों हाला । बोलत भये बचन तिहि
बाला ४१६ दो सूई हमको लै दीजै । एतो कहो हमारो कीजै ॥
कामिनि सुनत तुरित सो कीन्हा । लै सूई तिनके कर दी-
न्हा ४१७ कारण बिषय नेत्र गुणि सोई । लीन्हें छेदि नयन
तिन दोई ॥ भामिनि लखि किय हाहाकारा । तिहि पति धाइ
गयो तिहि बारा ४१८ बोल्यो दशा देखिकर जोरी । का तक-
सीर परी यह मोरी ॥ कहो बिल्वमंगल सुनि बैना । कछु तक-

सीर तुम्हारी हैना ४१९ मम तकसीर छिपी मोमाहीं। तुम सम धन्य लखत हम नाहीं॥ सो कह बिनय सहित तिन पाहीं। कछु दिन आप रहिय अब याहीं ४२० सेवा किंचित करहिं तुम्हारी। कह्यो बिल्वमंगल तिहि बारी॥ सेवा तुम कीन्ही है जोई। ऐसीसेवा करै न कोई ४२१ यह कहिकै बृन्दाबन आये। आसन भूरुह एक लगाये॥ लगे करन भगवत को ध्याना। क्षुधित तृषित जानो भगवाना ४२२ महा प्रसाद दीन्ह प्रभु लाई। पुनि आसन रह आतप छाई॥ कर गहि भगवत तिनहिंउठावा। छाया माहँ जाइ बैठावा ४२३ भोजन में लखि स्वाद अपारा। कोमल हाथ परसि तिहि बारा॥ जानि गये हरि बिनै नहिं कोई। पोढ़े कर पकरत भे सोई ४२४ दो०। कर छुड़ाइ हरिगे तबै ए बोलत भे बैन। करसों गये छुड़ाइकै हियसों छाँड़ौ मैंन ४२५ चौ०। यह कहि मन एकाग्र लगायो। भगवत ध्यान माहँ चित लायो॥ पुनि इच्छा मनमें यह होई। होतेनयन हमारे जोई ४२६ तौ दरश न हरि रूपन करते। कुंजबिहार देखि मुद भरते॥ भगवत यह तिन मन गति जानी। किये प्रकाशित चख सुखदानी ४२७ नयन पाइ अति हर्षित भयऊ। जाइ दरश भगवत बपु कयऊ॥ पुनि बैठेथिर आसन लाई। ध्यान माहँ चित गयो समाई ४२८ दो०। दरश भये भगवान के चिन्तामणि सुनि एह। आवत बृन्दाबन भई तिन ढिग गई सनेह ४२९ लखत बिल्वमंगल उठे पूर्व मित्रता जानि। आदर युत भेटत भये बैठारे गहि पानि ४३० कुशल प्रश्न पुनि पूछिकै भोजनदियो सनेह। चिन्तामणि पूछतभई कोलायो है एह ४३१ चौ०। कहत बिल्वमंगल सुनि बानी। दीन्हों यह भगवत सुखदानी॥ सुनत कह्यो चिन्तामणि तबहीं। मोहूं को देहैं हरिजबहीं ४३२ तब करिहौं भोजन सुखपाई। यहतौ तुम को दीन्हपठाई॥ अन्तर प्रेम तासु पहिंचानी। लैभोजन दीन्हों हरि आनी ४३३ दुर्लभ ब्रह्मादिकको जोई। भोजन किय बेश्या

वह सोई ॥ जाति पांति जानत प्रभु नाहीं। जियालाल सेवक प्रिय आहीं ४३४ छन्दमनहरण। यमन किरात भील शबरी पिशाच कपि गणिका कबन्ध गीध तारेदीन हेरेहै। दारिद सुदामा छीनो गोपिन सनाथ कीन्हों गज प्रहलाद बीच सुयश घनेरो है ॥ पांडुपुत्र राखि लीन बिप्र सुत आनि दीन बूड़त सों राखि लीन गोपन को खेरेहैं। ऐसे समरत्थ नर नाथन के नाथ नाथ जियालाल नावैं माथ केतो पाप मेरेहै ४३५॥

सूरदास मदनमोहनकी कथा॥

छं०रा०। सूरदास सुमदनमोहन बिप्रबर सुख भौन। संप्रदा जोमाध्व तामें प्रगट भे एतौन ॥ गानबिद्या काव्य रचनां निपुण उत्तम भक्त। प्रिया प्रीतमगोप्यलीला में सदा अनुरक्त ४३६ करत भे निज काव्यमें शृंगारबर्णनजौन। मलिक अकबरशाह केरी ओरसे पुनितौन ॥ रहेसूबेदार सो संदीलमें तिहिकाल। शर्करा लखि बिपणि में हरियोग्यलीन्ही हाल ४३७ बनहिंगे इहिमालपूआ मदन मोहन हेत। पठव शकटन माहिं वृन्दाबन हि तस्य निकेत॥ भये पहुँचत शकट निशि में देखिकै पूजार। लागिहि प्रातहि भोग कहि धरवाइयो भंडार ४३८ दो०। भक्त पठायो हेत मम जानि हिये भगवान। स्वप्नदियो पूजारको क्षुधित नींदनहिंआन ४३९बनैंमालपूआअबहिं उठेपुजारी जागि। रचिकै भोग लगायऊ हरिसोये सुख पागि ४४० जियालाल धनि भक्त हैं धन्य भाग हैं तस्य। क्षुधित तृप्त भगवानहू कहत दिये सो यस्य ४४१ जाकी माया जगत सब ग्रास करत क्षण माहिं ॥ सो भगवतहैं भक्त वश सब बिधि कृपा कराहिं ४४२ चौ०। भगवत सों इमि अरज सुनायो। एक बिष्णु पदमें यह गायो ॥ संत उपानह रक्षक जोई। पदवी मिलै मोहिं वह सोई ४४३ साधू एक परीक्षा लीन्हा। इबिधि बचन इनसों कहि दीन्हा। दरश मदनमोहन करि आवैं ॥ तबतक जूता

आपु बचावैं ४४४ प्रमुदित सूरदास तिहि काला । जूती लिय उठाय कर हाला ॥ आनँद सहित कहन इमि लयऊ । भगवत बचन सत्य मम कयऊ ॥ ४४५ सेवा मोहिं आजु यह दीन्हा । अति करुणा मम ऊपर कीन्हा ॥ गोसाँई बहु बार बुलायो । सूरदास इमि बचन सुनायो ४४६ साधु चरण सेवाको करिकै । पीछे दरश करहुं मुद भरिकै ॥ भये प्रसन्न देखि बिश्वासा । करौं अपर तिन कथा प्रकासा ४४७ तेरह लाख रुपैया जोई । करि तहसील आवतहँ सोई ॥ सो संतन कहँ दीन्ह खवाई । कंकर भरि तहँदीन्ह पठाई ४४८ पुरजा सन्दूकन धरि दयऊ । ताके मध्य लिखत इमि भयऊ ॥ तेरह लाख संदीले लीन्हा । ते साधुन मिलि भोजन कीन्हा ४४६ भागे सूरदास अधराता । बादशाह सुनिये यह बाता ॥ बादशाह पढ़ि या बिधि हाला । सभा मध्य बोले ततकाला ४५० संतन खायो यह भल भयऊ । भागे सूर न यह भल कयऊ ॥ सेवा साधु जानि सुख पायो । होन कसूरमाफ बुलवायो ४५१ याबिधि उजुर लिखतभे सोई । सूबेदारि आमिली जोई ॥ तासों सहस गुनो सुखपैहैं । श्रीवृन्दाबन झारू देहैं ४५२ दो० । टोड़रमल दीवान कह बादशाहसों बैन । इमिलेले सबभागिहैं राज्य चलनको हैन ४५३ गहन हेत आज्ञादई पकरिमँगायो तत्र । बन्दीभुवन पठाइयो करीदेर नाहिं अत्र ४५४ दोहा भेजत एक भे सूरदास तिहि काल । प्रगट प्रशंसा मलिक की निज दुख प्रगट कराल ४५५ दीन्ही कैदि छुटाइ कै बादशाह मतिधीर । छूटेवृन्दाबन गये कालिन्दीं के तीर ४५६ ब्रजकिशोर अरु लाड़िली ध्यानमग्न रहतत्र । वृन्दाबन बिहरत सदा रासमंडल हरियत्र ४५७ ॥

अग्रदासजी की कथा ॥

चौ० । कृष्णदास पयहारी जोई । तिनके शिष्य अग्र जी सोई ॥ प्रेमाधुर्य्य उपासकजोई । भजनतन्दकौनअसहोई ४५८

नाभाअंध नेत्र जिन दीन्हे । पोतउबारि सुडूबत लीन्हे ॥ ग्रंथारंभ माहँ लिखि दीन्हा । तातेइत बिस्तार न कीन्हा ४५६ दरश जानकीजी के पाये । ज्ञान विराग भक्ति सुखछाये ॥ गलताजी आमेर समीपा । कीन्हों वास भक्त कुलदीपा ४६० स्वामी केर विहार बिचारी । झारूस्वकरदेत फुलवारी ॥ यद्यपि बागवान बहुतहँवां । नाभादिक सेवक बहुजहँवां ४६१ एक दिवस आमेर नृपाला । मानासिंह आये तिहि काला ॥ दरशहेतबनवारी गयऊ । तिनको तहां लखत नहिंभयऊ ४६२ ये कूड़ाले गे तिहि बारी । वटतर बैठे हृदय बिचारी ॥ सकललोगदरशन इत लैहैं । उत नगरीवजानबहु पैहैं ४६३ अलपकाल ठहरैगो राजा । कुत्सित भूमि जानि सुखसाजा ॥ धनी जननकी संगति जोई । दुखदायक लायक नहिं होई ४६४ जबहिं बाटिका मांझ न पाये । बाहरनिकरि सजन नृपआये ॥ बटतर देखिदंडवत कयऊ । आशिरवाद देत सो भयऊ ४६५ ॥

कील्हदासजी की कथा ॥

छन्दरामगीतिका । पय अहारी कृष्णदासजु शिष्य तिनंके सोइ । शृंगार अरु माधुर्य्य में अति भे उपासक जोइ ॥ रामपद अरविन्द में रह ध्यानमग्न सदाइ । सुयश निर्मल जासु जगमें अजहुं प्रकट लखाइ४६६चौ० । नाम सुमेर देव जिनताता । सूबेदार रहे गुजराता ॥ तजिशरीर परलोक सिधाये । चढ़ि विमान मथुरा महँ आये ४६७ निकट सुमानसिंहमहिपाला । कील्हदास बैठेतिहिकाला॥ लखि उठितुरितदण्डवतकयऊ । भलोभयो भाषत इमि भयऊ ४६८ किहिवतरातकहोमहिपाला । प्रथम न इनप्रकटो वह हाला ॥ जब नृपबहुविधि पूछन लीन्हा । तब वृत्तांत सकल कहि दीन्हा ४६९ भूपति धावन तुरित पठायो । सत्य जानि निश्चय मनलायो ॥ पूजन करत रहे इकबारा । फूलपिटारी धरीअगारा ४७० डारो हाथ फूलहित जबहीं । काटत भो अंगु-

लि आछि तवहीं ॥ भयो न तृप्त जानि मनमाहीं । कष्टवायो पुनि पुनि तिहिपाहीं ४७१ पूजन करतभये हरषाई । विषबाधा तन में नहिंआई ॥ सांख्य योगमें भीष्म समाना । निज आधीन मृत्यु निज आना ४७२ परमधाम जब इच्छा कीन्हा । भगवत भक्त बोलि सबलीन्हा ॥ सबसों करि दण्डवत प्रणामा। भेदोदशम द्वार सुखधामा ४७३ दो० । परम धामगे देहतजि योगिन भ्रम उपजाइ । जियालाल महिमा अमित कापै बरणीजाइ ४७४

गोपालभट्टकी कथा ॥

छन्द रामगीतिका ॥ भये व्यंकट भट्टसुत गोपालभट्ट महान । महाप्रभु श्रीकृष्ण जो चैतन्यके शिषिजान ॥ परमभगवत भक्त ब्राह्मण जाति रस शृंगार । के उपासक बसत वृन्दाबिपिन आनँद धार ४७५ दो० । सहसन भगवत भक्तभे जिन प्रभावको पाइ । गुणतजि नहिं देखत भये अवगुण चित्त लगाइ ४७६ संपति अरुधन छोंड़िकै बसवृन्दाबन सोइ । ब्रजकिशोर महराजके शोभ मग्न रह जोइ ४७७ एक दिवस सेवा समयं कियो चिन्तवन एह । ध्यानालय शृंगार बपु जो देखत युत नेह ४७८ प्रगटंत शालग्राम में सोई रूप अनूप । भक्त मनोरथ पूर्ण हित प्रगटे भूपनभूप ४७९ चरणनके नीचे बपुष शालग्राम अनूप । ऊपरमदनाशक मदन प्रगटो सुंदररूप ४८० मंदिरमेंपधराइयोभट्टमहानँदसाज।नामधरोराधारमणहैंप्रसिद्धतहँआज४८१

केशवभट्टकी कथा ॥

दो० । काश्मीरी ब्राह्मण रहे केशव भट्ट अनूप । परमभक्त परमार्थगत दुखी कियेसुखरूप ४८२ बिदित प्रताप जहानमें भक्ति परशुकर धारि । अन्यधर्म भूरुहदले हरिचरित्र विस्तारि ४८३ संप्रदायनिम्बार्क में शिष्य प्रथम भे जोइ । माध्व संप्रदामें बहुरि शिष्य होतभे सोइ ४८४ ताको है वृत्तान्त यह पण्डित रहे महान।

शास्त्रार्थ जीते अमित कीन्हीं बिजय कहाँ न ४८५ शिष्य पण्डितन युत गये नदिया शांती काहँ। सुनत बिदुष भय भीत भे गुनिआगम तिन ताहँ ४८६ श्रीकृष्ण चैतन्य जी महा प्रभू रह जोइ। गर्बदूरकीन्हों चहो सात बर्षके सोइ ४८७ केशव भट्ट समीप गे बोले मीठे बैन। तव विद्या यश जगतमें छाव सुनिय गुण ऐन ४८८ कछुक सुनाइय हमहुँ को करिय कृतारथ आज। कहो भट्ट तुम बालहौ लखौ न बिदुष समाज ४८९ निरभय बोलत बचन इमि अमित ढिठाई होइ। परप्रसन्न मृदुबचन सुनि कहौ सुनावहुँ सोइ ४९० चौ०। महा प्रभू सुनि बोले बानी। कहिये गंगा रूप बखानी॥ निज निर्मित तव भट्टबखाना। इनकह चहत दोष गुण जाना ४९१ कहो भट्ट दूषण युत कैसी। मेरी काव्य होइ किमि ऐसी॥ सुनत प्रभू गुण दोष बखाने। जौन भट्ट सपने नहिं जाने ४९२ यह कहि भवन महा प्रभु गयऊ। बाणी ध्यान भट्टतब कयऊ॥ सुमिरत सरस्वती चलि आई। तिन सों भट्ट कहो शिर नाई ४९३ पुहुमि जीति बालक सो हारा। काह भयो अपराध हमारा॥ कहो सरस्वतिममपति सोई। मेरी का समरथ उत होई ४९४ पाव दरश धनिभागि तुम्हारी। गई सरस्वति भाषि सिधारी॥ निशिमहँ भट्ट शरण तिन आये। हाथ जोरि यह बिनय सुनाये ४९५ आज्ञा होइ तौन हम कीजै। मोको शरण आपनी दीजै॥ सुनत महा प्रभु बचन उचारा। करहु भक्तिहरि अंगीकारा ४९६ बिदुषनसों बिवाद तजि दीजै। एतो कहो हमारो कीजै॥ सुनत भट्ट प्रभु की यह बानी। आये भवन शीश धरि मानी ४९७ सुनतहाल मथुरा को भयऊ। मुसल मान बहु तहँ चलिगयऊ॥ पुनिं विश्राम घाटपरजाई। दीन्हों है इकयंत्र लगाई ४९८ हिन्दूजात तहांचलि जोई। सुन्नत आप आपही होई॥ मुसलमान बल सो करि लेवै। घले भट्टयाविधि सुनि भेवै ४९९ पुनि बिश्राम घाटचालि आये। मुसलमानलखि बचनसुनाये॥ होइ नग्न हम को

दिखरैये । तदुपरिबहुरि अग्र चलि जैये ५०० सुनत भट्ट क्रोधा-
तुर अंगा । धावसहस्र शिष्य निज संगा ॥ यंत्र तोरि यमुना
में डारा । मुसलमान गहि गहि बहुमारा ५०१ सूबापास गये
फिरयादी । उनकी रही दुष्टता आदी ॥ फौज संगउनके करि
दीन्हा । देखत भट्ट समर अति कीन्हा ५०२ दो० । चक्राराधन
भट्टकरि बरषाई शिखितत्र । मुसलमान लागे जरन गयेशरण
येंयत्र ५०३ चौ० । पुनि चरित्र कीन्हों यहजहवां । जेतमुसल-
मान रहतहँवां ॥ हिन्दू चिह्न परे दिखराई । औरौ शरण भयेते
आई ५०४ बोलेहाथ बांधि सब बानी । त्राहि त्राहि शरणागत
जानी ॥ बोलि भट्ट ब्रज लोगन लीन्हा । निर्भय मुसलमान सो
कीन्हा ५०५ दो० । भगवत भक्ति प्रवृत्ति तहँ करतभये सुखदा-
न । जियालाल हरिजन चरित कोकवि सकै बखान ॥ ५०६ ॥

बनवारी जीकी कथा ॥

चौ० । भगवंत भक्ति रङ्ग रङ्गीना । बनवारी भे भक्तप्रबीना॥
रसश्टंगार रसिक भे सोई । भजनानन्द मग्न चित जोई ५०७
बोलत मधुर बचन अति नीके । गत मदमान बिषय रस फीके॥
नव प्रकार जो भक्ति सुहाई । सोनिज मानस माहँ बसाई ५०८
करि सतसंगति मोह नशावै । होइ पबित्र दरशजो पावै ॥
गाथा बनवारी सुख दाना । जियालाल संक्षेप बखाना ५०९ ॥

यशवंत जीकी कथा ॥

चौ० । श्रीयशवंत भक्त पद पाये । राजपूत राठौर सुहाये ॥
सत्य प्रीति भगवत पदमाहीं । तजिहरि भजन अपर कछु नाहीं
५१० बास कियो वृन्दाबनजाई । हरि बिहार लीला चित लाई ॥
रसश्रृंगार चिंतवनकरहीं । नवधा भक्तिहिये निजधरहीं ॥५११॥

कल्याणदास जीकी कथा ॥

चौ० । भगवत भक्ति भलाई जोई । लह कल्याणदास सब

सोई॥ भगवत प्रेम मग्न सब काला। सुमिरत श्रीव्रजचन्द कृपाला ५१२ चिंतत भगवत रस शृंगारा। बोलत मधुर बचन सुख सारा॥ मन क्रम बचन भक्त हरि जोई। पर उपकारि दया युत सोई ५१३॥

कृर्णहरिदेव बिख्यात कन्हरदास की कथा॥

चौ०। भगवत भक्त भये अति सोई। कन्हरदास बिप्रबर जोई॥ जानत सब भविष्य की बाता। भानुसमान तेज जिनगाता ५१४ सोभूराम शिष्य मुद भीने। रस शृंगार माहँ लवलीने॥ अरु माधुर्य्य रूप भे सोई। समदरशी जानत सब कोई ५१५॥

लोकनाथ जी की कथा॥

चौ०। भगवत भक्त अनूप सुहाये। लोकनाथ पार्षद सम गाये॥ राधा कृष्ण चिंतवन जोई। अनुक्षण मग्न रहत मन सोई ५१६ दो०। श्रीकृष्ण चैतन्य के शिष्य रहे सुख दान। प्राणाधिक मन जानिकै करत भागवत गान ५१७॥

मानदास जी की कथा॥

चौ०। परम भक्त भगवत के सोई। मानदास उपकारी जोई॥ श्री रघुनन्दन पद सब बेरा। प्रेम अनन्य रहत जिन केरा ५१८ भे शृंगार उपासक भारी। अरु माधुर्य्य भाव मुदधारी॥ बरणे राम चरित्र सुहाये। निज कबिता सो प्रगट लखाये ५१९॥

कृष्णदास जी की कथा॥

चौ०। कृष्णदास जी भक्त सुहाये। श्री गोविन्दचन्द्रके गाये॥ रूप माधुरी अरु शृंगारा। मग्न रहत अह निशि सुखसारा५२० भगवत भक्त भवन जो आवैं। भांति भांति भोजन करवावैं॥ भगवत रूप चिंतवन करहीं। कीर्त्तन करि आनँद उरभरहीं५२१॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणबिरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येत्रिंशिशृङ्गारमाधुर्य्यमहिमानिष्ठायांबिंशतिभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौपंचबिंशस्तरंगः२५॥

निष्ठाचौबीशवीं ॥

छन्दरामगीतिका। निष्ठयह चौबीशवीं अबकरत बर्णनसोइ। कथा षोड्श भक्त वर्णन प्रेम महिमा जोइ॥ रामपद अरविन्द रेखा साधुहृदको नौमि। दण्डवत अवतार रामहिं करहुं धारो सौ-सि १ सो जगत उद्धार के हित अवधपुरमेंधार। धर्म की मर्याद थापी दुष्ट किय संहार॥ निज चरित्र पवित्र शुभ बिस्तार जगमें कीन। जियालाल सुपुत्र के सम प्रजहि आनँद दीन २ अति शुभग यह प्रेम निष्ठा रूप भगवत जोइ। निष्ठ सबकी सार अरु परिणाम जानिय सोइ॥ और याके अग्र साधन जानिये नहिं कोइ। मुक्ति अरु कैवल्य पद जोयही साधनहोइ ३ दो०। या निष्ठा जेभक्त हैं बरणों तिनके नाम। राम कमल पद भ्रम-रमन करत भये बिश्राम ४॥

अम्बरीषकीरानीकी कथा ॥

चौपाई। अब यह कथा कहों सुख दाई। अम्बरीषकी रानि सुहाई॥ जबहीं रानि ब्याहि घर आई। यह उपदेश नृपति सों पाई ५ भगवतकी पूजाके हेता। लगी करन बिश्वास समेता॥ ऐसो प्रेम बढ़ायो भारी॥ कबहुन होत भजन सों न्यारी ६ जबहिं नृपति जानो यह हाला। रानी भवन गये ततकाला॥ देखो भगवत प्रेम अपारा। सिद्धावस्था में पगुधारा ७ नाचत कबहुं कबहुं सोगावै। रोवत कबहुंहँसन चितलावै॥ कबहुं उमंग भरी हठलावै। कबहूं ध्यान मग्नहो जावै ८ दो०। भूपति देखि प्रसन्न भे भाग्य सराहन कीन। जातभये रानी निकटध्यान मग्न लखि लीन ९ चौपाई। भगवत छबि सुधि बुद्धि भुलानी। राजा को जानो नहिंरानी॥ बड़ीबेर बीते सुधिआई। देखि उठीभूपहि शिरनाई १० आदर रीति भाँति सनमाना। करत भई पति गुरु पहिंचाना। कहनृप भगवत कीर्त्तन कीजै। मेरेहू चित आनँददीजै ११ कीर्त्तन नृत्य करन सुनिलागी। प्रेममग्न

आनँद रसपागी ॥ निजपराव भूली तिहिकाला। बूड़े आनँद
पूरनृपाला १२ दोहा। तादिन सों भूपतिरहे रानीके सतसङ्ग।
धन्यभाग मानत भये दिनप्रति बढ़तउमङ्ग १३ ॥

सुतीक्ष्ण जी की कथा ॥

चौ० ॥ नामसुतीक्ष्ण ऋषीश्वरजोई। शिष्यअगस्त्य केर रहु
सोई ॥ रामोपासक प्रेमीधीरा। दण्ड कवन जबगे रघुबीरा १४
निकट सुतीक्ष्णाश्रम जब गयऊ। स्वाम्या गमन जानि इन
लयऊ ॥ आगेलेन चले सुखपाई। परमानन्द भरो उरआई १५
अपन बिरान भुलाने सोई। रूप अनूप चिन्तवन जोई ॥ ता-
बिन अपरन परत लखाई। भीतर बाहर सुरति भुलाई १६ मैं
कित जात कौनहौं काहां। पुनि सुधि होत कहत मन माहां ॥
आजु कौन शुभघरी सुहाई। कौन अद्य मंगल दिनआई १७
अजहरि हर सुर दुर्लभजोई। लखिहौं आजु नयन निजसोई ॥
बड़भागी मोसम नहिं कोई। पूर्णब्रह्म आये इत जोई १८ या
बिधि आनँद चिंतामाहीं। चलि पग अग्र संके सोनाहीं ॥ बि-
वश होइ बैठेपथ सोई। रूपध्यान बूड़े पुनि जोई १९ लषण
जानकी राम कृपाला। इनसमीप आये तिहि काला ॥ मुनि
परन्तु जानो नहिं जबहीं। दीन हांक रघुनन्दन तबहीं २० ज-
ब न सुनो गतध्यान अनूपा। अन्तर्द्धान कियो निजरूपा ॥
रूपचतुर्भुज हिये लखाये। व्याकुल भये न प्रभु लखिपाये २१
नयन खोलि आगे प्रभुदेखा। प्रेम मग्न पगगहे बिशेखा ॥ राम
उठाइ लाइ उर लीन्हा। पूरण सकल मनोरथ कीन्हा २२ आश्रम
ऋषय गये रघुराई। मुनिबहुभांतिकरी पहुनाई ॥ लागे अस्तुति
करन बहोरी। राम लषण जय जनक किशोरी २३ छन्दतोटक ॥
जयराम सियापति भूपबरं। महि-मण्डल मण्डन शोभधरं ॥
अघगंजन रंजन संतजनं। महिभार बिभंजन ज्ञान घनं २४ उर-
मानस शंकर हंसबरं। हित दीनदुखी सुर बृन्दकरं ॥ अहि संशय

नाशन वीशयथा। भवबन्धन रन्धनयस्यकथा २५ भवताप वि-
नाशक देवपरं। शुभशायक चाप निषंगधरं॥ अनवद्यअपार
बिकारगतं। श्रुतिपार न पावतयस्यमतं २६ भवसागर बोहित
बुद्धिपरं। मद लोभ बिनाशन क्रोधहरं॥ भुजदण्ड प्रचण्ड अख
ण्डसही। जनरक्षक भक्षक दुष्टसही २७ चखवारिज लालक-
पोलभले। अलिमण्डलपाइ सुगन्धचले॥ करिजूहनिशाचर
सिंहबलं। अघ ओघ बिनाशन गंगजलं २८ बनमोहबिनाशन
अग्निखरं। जनकाननवारिज भानुवरं॥ मदमोहममत्व सदा
शमनं। तवनौमि शुभांघ्रि सियारमनं २९ दो०। अल्प बुद्धि
महिमा अमित कहौं कौन बिधिनाथ। शेष शारदा सकन कहि
कबि कोबिद तवगाथ ३० चौ०। लियोराम पुनि हृदयलगाई।
बोलतभे अति आनँद पाई॥ मांगहु बर जो इच्छाहोई। तुम
कहँ देउँ आजु मैं सोई ३१ कहमुनि मैंबर मांगन कबहूँ। सत्या
सत्य न जानौं अबहूँ॥ तुमहिं नीकलागै सो दीजै। दास सुखद
मानस गुनिलीजै ३२ कहप्रभु भक्तिबिरतिबिज्ञाना। तुमहिं दीन
गुण ज्ञान अमाना॥ सुनि मुनीश बोले करजोरी। औरौ नाथ
बिनय यह मोरी ३३ लषण जानकी सहित कृपाला। मम उर
बसिये दीनदयाला॥ यद्यपि बसतहृदय सब केरे। तदपि बसहु
इहि बपु उर मेरे ३४ कामिहिं जा बिधि नारिपियारी। तिमिप्रिय
लागहु धनु शर धारी॥ याबिधि चितमें रहैसदाई। मैं सेवक
मम पति रघुराई ३५ एवमस्तुकहि रघुकुलदीपा। हर्षितचले
अगास्ति समीपा। कहो सुतीक्ष्ण तबहिं शिरनाई। ममयह बिनय
सुनिय रघुराई ३६ गुरु निज दरश करनहमजाहीं। तव सँग
चलहिं निहोरा नाहीं॥ लखत चलब मग तव पद कंजा। शमन
सकल दुख दल मद गंजा ३७ मुनि चतुरता जानि रघुराया।
बिहँसि संगलीन्हों करिदाया॥ पंथकहत निज भक्तिसुहाई॥
मुनि आश्रम पहुँचे प्रभुजाई ३८॥

शवरीकी कथा ॥

चौपाई। भीलनि योषित शवरी जोई। महिमा बरणि सकै नहिं कोई॥ जाकी भक्ति देखि अति भारी। भे आधीन ऋषीश्वर झारी ३६ अंकुर भक्ति जमो उर जबहीं। सेवा साधु लगी सो तबहीं॥ दण्डक बन पम्पासर तीरा। आश्रम मतंगादि मुनि धीरा ४० काष्ठ गुप्त निशि में धरि आवैं। पुनि ऋषिजिहि मग मज्जन जावैं॥ शवरी निशि मग जाइ बहारैं। ऋषि मतंग नित हिये बिचारैं ४१ सेवा कौन करत बड़भागी। मम तप भेद करन हित लागी॥ गुप्त ऋषिन इकादिन बैठाये। शवरीगई पकरि ते-लाये ४२ जब शवरी ऋषि सन्मुख आई। कांपन लगी रोइ भय पाई॥ भय सों बिनय सकी करिनाहीं। सकल ऋषिनजानो मन माहीं ४३ याकी काष्ठ जलावा जोई। शवरी नीच जाति यह सोई॥ नहिंजानैं किहि पाप पधारैं। ऋषि मतंग पुनि मनहिं बिचारैं ४४ भक्ति प्रभाव जानहिय जोई। यह सिद्धान्त बिचारो सोई॥परम पवित्र शुद्ध है एहा। जाउर प्रगट संत पद नेहा ४५ गे निज आश्रम ताहि लवाई। भगवत मंत्र दियो सुखपाई॥ लागेजान परमपद जबहीं। शवरी सों बोले इमि तबहीं ४६ पूर्णब्रह्म रघुबर इतऐहैं। तबतोकहँ निज दर्शन देहैं॥ शवरी गुरु बियोग दुख पावा। पर रघुनन्दन पदचित लावा ४७ दरशन आश किये मनमाहीं। भजन ध्यान तजि कारज नाहीं॥ जौनघाटमज्जन मुनि जाहीं। शवरीबाट बहारत ताहीं ४८ समय बिलम्बभयो इकदीना। शवरी कोलख ऋषय प्रबीना॥ कीन्ह क्रोध कटु बचन सुनाये। मज्जन हेत बहुरिमुनि आये ४६ तहँ जलदेखो रुधिर समाना। तामहँ कीटलखे बिधि नाना॥ मनबिचारमुनि जन यह कयऊ। शवरी छुये बिगरिजल गयऊ ५० मुनि जन घूमि कुटीनिज आये। कुटीगई शवरीभय पाये॥ पुनि चिन्ता कीन्हों मनमाहीं। रघुबर हेत धरो कछु नाहीं ५१ बनबंन फल ढूंढ़न सो लागी। बदरी फल तोरत सुख पागी॥ चाखि होइँ

मीठे सो लेवै। खट्टे होइँ फेंकि सो देवै ५२ पुनि वहि. राह जात
दिन दीना। ऐहैं राम जासु पर बीना॥ देखा करत बाट टक-
लाई। पुनि यह चित्त बसत जब आई ५३ ओछी जाति
कुरूप अपारा। झाड़ी माहँ छिपत तिहि बारा॥ पुनि उरगुरु
के बचन सँभारै। अघि पावनता प्रभु चितु धारै ५४ आगे लेन
हेत हठिधावै। भगवत कृपा दृष्टिउर लावै॥ या विधि भगवत
प्रेम अपारा। चिन्ता में बीतत निशिबारा ५५ बहुत दिवस
बीते इहि भांती। तिहि बन गये राम गुण पाती॥ पूंछत भे
लोगन सुख पाई। शवरी आश्रम देहु बताई ५६ आश्रम निकट
गये रघुराई। शवरी कीन्ह दण्डवत धाई॥ रघुबर धाइ लीन्ह
उर लाई। प्रेम प्रमोदन कछुकहि जाई ५७ भो आनन्द शवरि
उर जोई। कवि जन भाखि सकत नहिं सोई॥ राम चन्द्र मुख
चन्द्र चकोरी। शवरी होंत भई बरजोरी ५८ दो०। मग्न भई
प्रभु दरशमें निर्भर आनँद जासु। जल प्रवाह नयनन बहो वार
पार नहिं तासु ५९ चौ०। पुनि शवरी अति आनँद पाई।
निज आश्रम कहँ गई लवाई॥ बेरधरे दिन दिन लै जोई।
रघुनन्दन कहँ दीन्हों सोई ६० भोजन करन लगे रघुराई। भाग
सराहत सुर समुदाई॥ डारत राम बेरमुख जबहीं। स्वादसराहत
बहुबिधि तबहीं ६१ ऐसे बेर कबहुँ नहिं खाये। जैसे शवरी तव
घर पाये॥ बेरखाइ बैठरघुनाथा। आगम सुनत भये ऋषिनाथा॥
६२ अचरजमानि दरश हित आये। धर्मकर्म कर गर्ब नशाये॥
भये कृतारथ दरशन पाई। पुनिसबहुन मिलि बात चलाई ६३
सहमल भो तड़ागकर पाथा। सो किमि शुद्ध होइ रघुनाथा॥
तब रघुनन्दन कहो बुझाई। शवरी चरण परहि जबजाई ६४
बिमल शुद्ध तबहीं जल होई। शवरी बिनय कीन्ह ऋषि सोई॥
लै तिहि तहां गये ऋषि झारी। परतहि चरण भयो शुभवारी ६५
पुनि रघुनन्दन आनँद पाई। शवरिहि नवधा भक्तिबताई॥
आमे जानि हेत सुखदाई। मांगत बिदा भये रघुराई ६६ ब्रह्मन्तर

प्रभु रूप समाना । जात राम शबरी यहजाना ॥ मांगत बिदा तजो तनहाला । सहि नहिं सकी बियोगकराला ६७ तिहिच्चण प्राण निछावरि करिकै । परमधाम पहुँची मुदभरिकै ॥ दाहकर्म भगवत तिहि कीन्हा । आवागमन दूरि करि दीन्हा ६८ ऐसे रामहिं जेनहिं भजहीं । नाना दुखन किमि न नर सजहीं ॥ करुबिश्वास आश पदलाऊ । जियालाल अनुराग बढ़ाऊ ६९ पाप जनी कुलहीन मलीना । ताकहँ राम परम पद दीन्हा ॥ जो कुलीन प्रभुपद चितलावै । सो कैसे न परमगतिपावै ७० ॥

सपत्नीक विदुरजीकी कथा ॥

चौ० । बिदुर सपत्नि भक्ति सुख सारा । लीन्हों जगति धर्म्म अवतारा ॥ मांडवि शाप मनुज तनु पावा । भारत माहँ ब्यास मुनि गावा ७१ जेती प्रीति बिदुर हरिमाहीं । तिनसों अधिक नारि तिनकाहीं ॥ जब हरिसंधि करावन हेता । दुर्योधनके गये निकेता ७२ तासों नीति भाषि समुझायो । पर वाके मन नेक न भायो ॥ भोजन हित कह भगवत पाहीं । अङ्गीकार कियो हरिनाहीं ७३ जानि अभक्त ताहि तजिदीन्हा । मन्दिर बिदुर गमन प्रभु कीन्हा ॥ बिदुर रहे नहिं घरतिहि बारी । मज्ज न करत रही तिननारी ७४ आगम सुनि बसुदेव कुमारा । धाई नग्नहर्षि तिहि बारा ॥ भूली बस्त्र रहो नहिंचेता । हर्ष समातन दरशन हेता ७५ लज्जा राखन श्रीयदुराई । पीताम्बर दियतुरित उढ़ाई ॥ भगवत कहँ मन्दिर निजलाई । सिंहासन सप्रेम बैठाई ७६ बे सुधिभई प्रेममें भारी । मग्नानँदतन दशाबिसारी ॥ ताकीदशा देखिभगवाना । याविधिसों पुनिबचनबखाना ७७ भूख लगी मोकहँ यह कीजै । भोजन कछूहोइ लैदीजै ॥ रंभाफललाई अनुरागी । भोजन स्वकर करावन लागी ७८ दो० । गूदाडारत भूमिमें बकला हरिको देत । हरिसराहि भोजनकरतस्वाद प्रेमयुत हेत ७९ चौ० । तिहिक्षणमध्य बिदुर तहँ आये । कृष्णहि देखिचरण

शिर नाये ॥ लखि युवती कहँ तर्जन लागे । बकला देत कृष्ण के आगे ८० गूदा देत भूमि में डारी । यह का करत मन्दमति नारी ॥ यह कहि आपु खवावन लागे । बोलतभये कृष्ण सुख पागे ८१ स्वाद रहो बकलामें जोई । या गूदाम बिदुर नहिं सोई ॥ जियालाल यह सत्य न आना । रीझत एक प्रेम भगवाना ८२॥

भक्तदास जीकी कथा ॥

चौ० । भूपति भक्तदास सुखधामा । कुलशेखर जिनकर उपनामा ॥ रामोपासक भक्त सुहाये । भगवत चरित सुनत मन लाये ८३ प्रेम सहित लीला उत्साहा । करत नवीन नित्य नर नाहा ॥ ब्राह्मण कथा सुनावत जोई । भूपप्रेम जानत सब सोई ८४ गाथा सीयहरण जब आवै । ताहि त्यागि पुनि अग्रसुनावै॥ एक दिवस ब्राह्मण दुखपावा । कथा सुनावन पुत्र पठावा ८५ तादिन सोईकथा सुनाई । हरोजानकी रावण आई ॥ लैदक्षिण दिशिकाहँ सिधायो । एतो बचन नृपति सुनिपायो ८६ भूपति नग्नखड्ग लै धायो । मारु मारु कै टेरिसुनायो ॥ पुनि चढ़िअश्व लंक की ओरा । चलत भयो कहि बचन कठोरा ८७ माताहि देखौं रावणमारी । किमि लै जैहै मातु हमारी ॥ वारिधि परो राहमें आई । निर्भय दीन्हों अश्वफँदाई ८८ तबहिं प्रगट भे दुष्ट निकन्दन । लषण जानकी सह रघुनन्दन ॥ भावन भक्त भक्त मन रंजन । ज़ियालाल अघदुखदल गंजन ८९ कहांजात कुल शेखर राजा । रावण मारि कीन हम काजा ॥ जनक नन्दिनी सह चलि आये । ज़ात अयोध्या को सुखपाये ९० भूपतिसुनत दण्डवत कीन्हा । युगुल स्वरूप हिये धरिलीन्हा ॥ प्राण नवीन लहे जनु राजा । आव राजधानी महराजा ९१ दो० । प्रेम भक्ति में लीन भे भूपति परमप्रबीन । बिना प्रेम जलहीन जिमि मीनांडज परहीन ९२ ॥

बिट्ठलदास जीकी कथा ॥

चौ०। विट्ठलदास भक्त सुखसारा। माथुर चौबे अनहंकारा॥ मानद परोपकारी सोई। पर अवगुण परदृष्टि न होई ९३ इन पितु रह्यो पुरोहित राना। बिट्ठल दास तजो तहँ जाना॥ राना पूछो लोगन पाहीं। प्रोहित सुत आवत किमि नाहीं ९४ लोग पठाव बुलावन काहीं। परये जात भये तहँ नाहीं॥ दूजी बारहु जब नहिं गयऊ। शत्रुन तब राना सों कह्यऊ ९५ वैरागी संङ्गति तिहि भावै। रागरंग निशिदिवस बितावै॥ अपने आपं भक्त जिय जानै। तब राना इहि भांति बखानै ९६ विट्ठल दास पाहँ कहि दीजे। ममघर आजु जागरण कीजै॥ सो सुनि हरि भक्तन सँग लैकै। सहित समाज गये मुद कैकै ९७ देखत राना आदर कीन्हा। अँटा तिमँजिले आसन दीन्हा॥ कीर्त्तन भजन होन तहँ लागे। विट्ठल दास मनहिं अनुरागे॥ बेसुधि भये भूलि रस माहीं। कीर्त्तन करन लगे पुनि ताहीं ९८ भूले नृत्य गानके माहीं। मन्दिर देह रही सुधि नाहीं ९९ भूमें आइ गिरे तिहि बारी। राजा देखि शोचकिये भारी॥ तर्जन भर्त्सन दुष्टन कीन्हा। साधु उठाइ धाइ पुनि लीन्हा १०० लैगे सोतिन भुवन उठाई। तीजे दिवस देह सुधि आई॥ माता तिनकी कहो बुझाई। जा बिधि लीन परीक्षा राई १०१ बिट्ठल दास निशा को पाई। गेछठीकरा ग्राम सिधाई॥ जहां यशोदा छट्ठीकीन्हा। श्री नँदनन्दन की मुद भीना १०२ श्री गोबिन्द गरुड़ की पूजा। लागे करन काम नहिंदूजा॥ नृप सेवक ढूंढ़ेचहु घाहीं। विट्ठल दास मिले कहुँ नाहीं१०३ माता नारी तिन चलि आई। भुवन चलन हित कहो सुनाई॥ ओऊ रहीं न सो घरगयऊ। कछु दिन गये दुखी तन भयऊ १०४ भगवत तिन सों स्वप्न प्रकासा। जाइ करहु मथुरा में बासा॥ तीनि दिवस जब आज्ञा पायो। बेबश हो मथुरा में आयो। १०५ देखि सजाती भक्तिबिहीना। बढ़ई भक्त गमन घर कीन्हा॥ उतरे बिट्ठल दास सुखारी।

परमं सती सगर्भ तिहि नारी १०६ चिन्ताखर्च कि भई महाना। मिट्टी खोदत में भगवाना॥ प्रगटे मूर्ति सघन अनुरागे। विट्ठल दास देन तिहि लागे १०७ चरणगहे बढ़ई कर जोरी। सुनिये नाथ बिनय यह मोरी॥ करें आप भगवत की सेवा। द्रव्य खर्च कीजिय यह देवा १०८ बिट्ठल दास प्रीति अति करिकै। सेवाकरन लगे मुदभरिकै॥ भक्ति प्रभाव देखि तिन केरा। शिष्यभयो तहँ लोगघनेरा १०९ भगवत कीर्त्तन रहत समाजा। जनु तनु धरिउत्साह बिराजा॥ बिधिबश एक नटिनि तहँ आई। नृत्य कीन हरिसन्मुख गाई ११० भगवत प्रेम मग्न तिहिबारा। बिट्ठल दास न रही सँभारा॥ बस्त्राभूषण लै सब दीन्हे। ताहू को कमती जबचीन्हे १११ नाम सुवन निज रंगीराया। हरिकी ताहिं निछावरि लाया॥ दैंदीन्हों नटिनी कहँ सोई। रंगी राय रहे सोजोई ११२ परम गुरू रानाकी कन्या। यहबृत्तांत सुनासो धन्या॥ पठयो नटिनी पास कहाई। धन लेवै गुरु देइ छुमाई ११३ सुनि नटिनी यहं उत्तर दीन्हा। धनकी मैंकछुचाह न कीन्हा॥ रीझिदेउँ सबधन मनगाता। राना सुता सुनीयह बाता ११४ बिट्ठल दास बिनय करि जोई। बहुरि समाज करायो सोई॥ भगवदग्र किंय नृत्य बिशेखी। चकित भई नटिनी वहदेखी ११५ रंगी राय काहँ सोलाई॥ सह शृंगार यान बैठाई॥ नटिनी की आज्ञा तिन पाई। लागे नृत्य करन हरषाई ११६ प्रेम विवश भो सकल समाजा। पुनि नटिनी धनसंपति सांजा॥ रंगी राय सहित लै जोई। हरिअर्पण कीन्हों तहँ सोई ११७ कीन निछावरि लीजिय नांहीं। रंगीरायकहो पितुपाहीं॥ सुनिकै बिट्ठलदास न लीन्हा। अङ्गीकार भूप जाकीन्हा ११८ देहतत्त्वमय दीन्ही चीन्हा। रङ्गीराय तुरित तजि दीन्हा॥ परम धामगे परमपवित्रा। प्रेम प्रबर्द्धक किये चरित्रा ११९॥

कृष्णदास जीकी कथा॥

चौ०। कृष्णदास सोनार सुहाये। परम भक्त भगवत के

गाये॥ कीर्त्तनकी जानत सब सामा। स्वरअरुताल मूर्छना ग्रामा १२० जिन पितु खरगसेनि रह नामा। एक दिवसकी बात ललामा॥ पूजा करिभगवत के आगे। नृत्यकरन लागे सुखपागे १२१ भगवतरूप चिंतवन चरिता। बे सुधि भये मग्न रस सरिता॥टूटिपरो घूंघुरू पगतेरे। हरिविक्षेप समामहँहेरे १२२ समाभंग रक्षण तिहिबारा। रसिक बिहारी अति रिझवारा॥ चरण कमल निज नूपुरलयऊ। निजकर उठि पहिनावत भयऊ १२३ दो०। कृष्णदास नृत्यांतमें जानो यह वृत्तान्त। भगवत कृपा सुभाग्य निज पावतभे सोनांत १२४ मग्नभये अति प्रेम में लग्न सदापद कंज। भग्न मानमद हरि सरिस हरिजन लख अघगंज १२५॥

कात्यायनी जीकी कथा॥

चौ०। कहिन जाइ जिन प्रेम महाना। कात्यायनी भक्त भगवाना॥ ब्रजगोपिन सम प्रीति अपारा। श्री ब्रजराजमाहँ जिन धारा १२६ कबहुँ हँसत रोवत कहुँ गावै। प्रेममूर्त्तिमानहुँ छबि पावै॥ कीर्त्तन मगन रही इकबारा। पवन तेज सुनि तरु झनकारा १२७ ताल मृदंग बजावत कोई। इनजानो निजमन में सोई॥ भगवत सन्मुख मैं जो गावत। ताते ए सब बाद्य बजावत १२८ दो०। दियो पारतोषिक चहिय यहमन कियोबिचार। प्रेममग्न बे सुधि महा दीन्हे बसन उतार १२९॥

माधवदास जीकी कथा॥

चौ०। माधवदास कथागढ़ केरे। प्रेमीभगवत भक्त घनेरे॥ कीर्त्तन सुनत आपहू करहीं। भगवतरूप मधुर हियधरहीं १३० बे सुधिहो लोटत भूमाहीं। अधिपति नगर भक्त हरिनाहीं॥ दुष्टमनुज बहँकावत भयऊ। माधवदास झूठढँगठयऊ १३१ लेनपरीक्षानृप अज्ञाना। निज मन्दिर समाज यहठाना॥ सभासमाजंतिमहंलेकीन्हा। माधवदास जानमनदीन्हा १३२ नूपुरबाँधि नृत्यअनुरागे।

प्रेममगन पुनि लोटन लागे ॥ छतसों गिरेभूमिमेंजाई। तप्तकराह परेसो आई १३३ दो० । उत्सव के पक्वान्न हित चढ़कराह रहयत्र। नेक चोट तननहिं लगी राखो भगवत तत्र १३४ भूपति की आंखैं खुलीं भयलज्जा को धार। भक्तन के आधीन भो किय भक्त्यङ्गीकार १३५॥

नारायण दास जीकी कथा॥

चौ०। नर्त्तक श्रीनारायण दासा । जिनहिय भगवत प्रेम प्रकासा॥ नर्त्तक यदपि सहस्रन नाना । तदपि न इनके भये समाना १३६ भगवतप्रेम निबाहो जैसो। सकत निबाहि न दोसर तैसो। अक्षर अर्थ समुझि सो गावैं। सोई भाव हियेनिज लावैं १३७ नृत्य करत भगवत के आगे। नाना प्रीति भाव अनुरागे॥ कोऊ मनुज अग्रनहिं गावैं। नाचैं नहीं न आँनंद पावैं १३८ दो०। दरश करत हरि मन्दिरन एकसमय सुखपाइ। निकट प्रयाग सराय जो हँडिया पहुँचे जाइ १३९ चौ०। अधिपति रहो यमन तहँ केरा। इन आगमन सुनोतिहि बेरा॥ नृत्य गान हित पठत्र बुलाई। करत बिचार भये मन लाई १४० भगवत सिंहासन सुखदाई। यमन समीप कि बिधि लैजाई॥ बिनागये बनिहै कछुनाहीं। पुनि बिचार कीन्ही मन माहीं॥ १४१ भगवत सम तुलसी सुखदाई। उच्चसिंहासन लै पधराई॥ मीरा कथित भजन तिनगायो। अर्थ समुझि तनदशा भुलायो॥ १४२ लख समाज हरि राधाकेरा। प्रेमभाव तहँ लखोवनेरा॥ प्राण निछावरिकिय सुखपाई। नित्य बिहार मिलेसोजाई १४३॥

लीलानु करनजी की कथा॥

चौ०। पुरिपुरुषोत्तम ब्राह्मणएका। प्रेमीभगवत भक्तबिबेका॥ रूपानुभवमग्न सोहोई। तन्मय पुनि बेसुधिहोजोई १४४ भइनृसिंह लीला इकबारा। चतुर्दशी नृसिंह सुख सारा॥ धूम धाम सोलोगन कीन्हा। विप्रहि रचि नृसिंह बपु दीन्हा १४५ लीलाहोनलगी

तिहि बारा। जब यह बात भई संचारा॥ श्रीनृसिंह हिरणाकुश मारा। जन प्रह्लाद राज्य बैठारा १४६ क्रोधित विप्र धाव तिहि बारा। बिरचित दैत्य नखोदर फारा॥ राज्य दीन्ह प्रह्लादहिजाई। लखि लोगन कह बचन सुनाई १४७ डारो मारि शत्रुताहेता। कोऊ कहत भये मुदसेता॥ आव नृसिंह अंश इहिमाहीं। ताते मारो अचरज नाहीं १४८ पुनि सबहुन मिलि कीन्ह बिचारा। लीलाराम होइ जिहिबारा॥ दशरथ इनको देहु बनाई। आपुहि प्रेम प्रगट खुलिजाई १४९ लीलाराम समय सो कीन्हा। दशरथ रूप तिनहिं रचिदीन्हा॥ जबहिंरामबन बास सिधाये। घूमि सुमन्त खबरि लै आये १५० सुनत सँदेश प्राण तजि दीन्हा। दशरथ अधिक जाइ पद लीन्हा॥ या बिधि जबतन प्रेम सुहावै। जियालाल तबहीं सुखपावै १५१॥

मुरारिदास जीकी कथा॥

चौ०। देश जुमाड़वार सुखछावा। बलवंडातहँशहर सुहावा॥ तहाँ मुरारिदास छबि पाये। श्रीरघुनन्दन भक्त सुहाये १५२ भगवत जनसेवा मन लावैं। भगवत के उत्साह सजावैं॥ रामै चरित मनलीन सदाई। एकदिवस की बात सुहाई १५३ एक चमार भक्त रघुराई। सेवा पूजा करत सदाई॥ उच्चस्वर सों कहत पुकारी। चरणोदक ले जो अधिकारी १५४ सुनत मुरारिदास यह भयऊ। ताकेभुवन तुरित चलिगयऊ॥ देखत काँपन लगो चमारा। इनकह क्यों भय चित्त बिचारा १५५ केवल चरणामृत हितआये। असकहि आश्वास मनलाये॥ बिनय चमार कीन्ह बहुभाँती। दैकिमि सकत नीच मैंजाती १५६ कहत मुरारिदास सभुझाई। तुम हमसों उत्तम हौभाई॥ जोकछु डरहोवै तुम काहीं। काहू सों कहिहैं हमनाहीं १५७ असकहि बिह्वलभेतिहि तीरा। बहनलगो नयनमें नीरा॥ सोलखि पूंछत भयो चमारा। रोवत किमि चित काह बिचारा १५८ इनकह नयनपिरातँहमारे।

पुनि चमारें इमि बचन उचारे॥ लेहुन चरणोदकमोपाहीं। लीन्हो हठकरि मानोनाहीं १५९ गुनिहरिभक्तन करी बिचारा। जाति कर्म पर डारोछारा॥ बेद पुराण संतमतएहा। करिय रामपद छल तजि नेहा १६० भल कुल ऊंच न भलकुलनीचा। रघुबर भक्ति जासु उरबीचा॥ राम भक्ति नहिं जाउरबीचा। ऊंचोकुल नीचहुते नीचा १६१ फैलीबात नगरमें सारी। बोलीमारत सब नरनारी॥ समाचार राजाहू जाना। अच्छी बातन यह मनआना १६२ दाससुरारिगये इकबारा। बैठेभूप जहाँ दरबारा॥ कियनप्रथम समआदर राजा। उठेतुच्छ गुनि सकल समाजा १६३ कतहूं रहे अन्यथलजाई। भूपति नगर भईबिकलाई॥ आवत नगर न संत प्रबीना। दारिद रोग ग्रसितजनछीना १६४ भूपति जब जानो यहहाला। तिन्ह समीप पहुंचे ततकाला॥ दीनताहु कोमलता साथा। कीन्ह दण्डवत पुनि नरनाथा १६५ तबहिं मुरारि दास मुखफेरा। भगवत बिमुख नचाहियहेरा॥ नृपति हाथजोरे तहँठाढ़े। बूड़त लाज नदी महँगाढ़े १६६ बहुरि दण्डवत किय महि पाला। बोले बचन धरि महिभाला॥ दीजिय दण्ड दयाकरि जोई। मेरे योग्य अहै सबसोई १६७ मम शुभभाग्य नकछु सन्देहा। मिले आपु समगुरु गुणगेहा॥ है कछुन्यून कृपामें जाते। चरणन में बिश्वास नताते १६८ बचन कटाक्ष सुनत हरषाने। बोले बचनदयासोंसाने॥शंकाभक्तजननन्हिंकीजै। सदाधन्य तिनको गुणिलीजै १६९ लखिय श्वपचबाल्मीकसुहायो। यज्ञ युधिष्ठिरमेंछबि पायो॥शबरीपगशरभयो पवित्रा। जानत प्रगट निषाद चरित्रा १७० नामबखानि पारको पावै कहि किन्न कोटिन जन्म गवाँवै॥ भयेबहुतहैं हैहैं आगे। महा मोह निशि सोवतजागे १७१ कहि नृप हृदय हरो अंधियारा। प्रगटत भये भक्तातिहि बारा॥ भूपति साथ नृपति पुरआये। दुरेसकल दुखआनँद छाये १७२ साधुसमाज होन पुनिलागा। सबके उरबाढ़ो अनुरागा॥ एक समय कर चरित सुहावा। की-

र्त्तन राम भयो सुखछावा १७३ दो०॥ जबहिं रामवन गमनकी भयो चरित्र बखान । ध्यानमग्न तन्मय भये तजिदीन्हे निज प्रान १७४ श्रीरघुनन्दन परमपद पायोदास मुरारि। जियाला- ल भगवत चरण प्रेमसकल सुखकारि १७५ ॥

गदाधर भट्टजीकी कथा ॥

चौ०। भक्त गदाधर भट्टसुहाये। प्रेमीभक्ति समुद्र महाये॥ शीलखानि बोलत मृदु बानी । निस्पृह अरु अनन्य छबि खानी १७६ सेवत भगवत जनमन लाई । भजनानन्द रहो उरछाई॥ तस्यभक्ति सुनि जीव गुसाईं। लिखि पत्री याभांति पठाई १७७ कीन्हों बृन्दाबनं नहिं बासा। भक्ति रंग किहिभांति प्रकासा॥ पत्रीलिये साधु तहँ आये। बसत भट्ट जिहि ग्रामसुहा- ये १७८ बैठेभट्ट कूप तट ग्रामा। पूंछत साधु भट्टकर धामा॥क- ही गदाधर कहँ सों आये। तिन वृन्दावन धाम बताये १७६ नाम सुनत बृन्दाबन केरा। बेसुध भे सप्रेम तिहि बेरा॥ भूमें गिरे रही सुधि नाहीं। चेतत भये कालकछु माहीं १८० आनँद मग्न महाअतिसोई ।मौन चित्र पूतरि जनु होई॥ कोउ कह- त भो साधुन पाहीं। एई भट्ट गदाधर आहीं १८१ साधुनसुनि दीन्ही वह पाती। पढ़ि शिर धारि जुड़ाई छाती॥ बृन्दाबनहिं तुरित चलि भयऊ। जीव गुसाईं के ढिग गयऊ १८२ कीन्हों प्रेम परस्पर भारी। मिले उभय तनु दशा बिसारी॥ कीन्हपर- स्पर पुनि सतसंगा। भगवत रूप रँगे निज अंगा १८३ कथा भागवत अति सुखदाना। भट्ट गदाधर करत बखांना॥ नृपक- ल्याण सिंह नितआवै। बसत दरेरा ग्रामसुहावै १८४ वृन्दाका- ननढिगसों ग्रामा। लागो चित हरिपाद ललामा॥ भगवत भ- जन बढ़ो अनुरागा । आवन जान भुवन को त्यागा १८५ नारी तासुहाल यहजानो। मनमें कैरत भई अनुमाना॥ काम बासना उन तजिदीन्हा। भिक्षुकि नारि बोलि इकलीन्हा १८६

तौन सगर्भ बुभुक्षित नारी । मुद्राबीस दिये तिहि बारी ॥ ताहि सिखाइ कहो इमि तबहीं । बांचैं कथा गदाधर जबहीं १८७ तब कहि औ हम जौन सिखावा । असकहि तिनके भवन पठावा ॥ बांचन कथा गदाधर लागे । श्रोता सुनन लाग अनुरागे १८८ तात्क्षण जातभई वह नारी । कहो गदाधर पाहँ पुकारी ॥ तब तौं हेल मेल बहुकीन्हा । देखि सगर्भ खर्च नहिं दीन्हा १८९ कथाराखि तब भट्टबखाना । तुमहीं छांड़िदियो इत आना ॥ सबनबात मिथ्या यहमानी । गोसाईंजीने यहजानी १९० नारी को समीप बुलवाई । राधा वल्लभ लाल गुसाईं ॥ त्रास दिखाइ सुपूंछन लीन्हा । तबतौ सभय सत्यकहि दीन्हा १९१ नारि चरित्र जानि दुख दाता । सुनि कल्याणसिंह यहबाता ॥ निज नारी मारन के हेता । लीन्ह खड्ग तब बुद्धि निकेता १९२ देखत भट्ट दयाउर आनी । तिनसों कह इमि बचन बखानी ॥ अब नहिं कछू कहिय निजनारी । दीन्हों त्यागि दण्डयह भारी १९३ एक महंत कथामें आये । तिहि सर्बाग्र भट्ट बैठाये ॥ आंशू प्रेम बहत सबकेरे । देखि महंत हिये निजहेरे १९४ व्यंगवचन कहिहैं सबलोगा । लाये मिरिच बस्त्रके योगा ॥ नयनन माहँ लगायो जबहीं । आंशूबहन लाग तिन तबहीं १९५ जानत रहो एक जनहाला । कहो कथांत भट्ट सो ख्याला ॥ भट्टशुद्ध चित मानसआना । यह महंत निजहियमें जाना १९६ जिन नयनन प्रेमाश्रु नाहीं । देवोमिरिच भलो तिन माहीं ॥ मिले भट्टअति प्रेमबढ़ाई । जिनकी कृपा भक्ति उर छाई १९७ एक समय तिन मन्दिर माहीं । आइ चोर बांधो गथ काहीं ॥ भारी पोटन सको उठाई । दीन्हों भट्ट आइ उठवाई १९८ तस्कर लखि मन चिन्ता कीन्हा । को यह हमहिं पकरि नहिं लीन्हा ॥ पूंछत भोतब तिनकोनामा । दीन्हबताइ भट्ट गुणधामा १९९ कहो चोर सों पुनि सुखपाई । लैजाबशीघ्र जाहु तुमभाई ॥ येते माहँ भयउ भिनुसारा। चरण नै परि तब चोर पुकारा २०० सोधन मोंकहँदेहु

विशोका। मैंनिरुपाधिहोउँ दुहुँलोका॥ यहकहि रोइ चरणगहि लीन्हा। करिकै कृपा मंत्र तिहिदीन्हा २०१ चोरकर्मतिहि दीन्ह छुड़ाई। माखन चोर सुवाहँ गहाई ॥ भगवत हेत रसोई कामा। निजकर करत भट्ट सुखधामा २०२ एकदिवसइकआव नृपाला। चौकादेत रहे तिहिकाला॥ सेवक आइ कह्यो तिहि बारी। आवत नृपदेहै धनभारी २०३ गहीपे चलिये इहिबारा। सुनत भट्ट किय क्रोध अपारा॥ भगवत सेवतजैं इहिबारी। यासों अधिक काम वहभारी २०४ भट्टगदाधर चरित अपारा। ऐसे अपर महा सुखसारा॥ जियालाल हरिभक्त चरित्रा। आनँद दायक परम पवित्रा २०५॥

रतवंतीजीकी कथा॥

चौ०। परमभक्त रतवंती बाई। सों वात्सल्य उपासक गाई॥ धरिमानस अतिप्रेम अपारा। भगवत भोग करंत तय्यारा २०६ कतहुं होत भागवत सुहाई। नियम समेत सुनन नितजाई॥ भगवत भोग बनाव दिनैका। जाइनसकी कथा सुनिवेका॥ २०७ सुवन आपनो दीन्ह पठाई। तादिन कथा भरी यहआई॥ नँद नन्दन ब्रजचन्द कन्हाई। माखन निजघरमाहँ चुराई २०८ सोरहमित्रनकाहँ खवाई। देतमर्कटनकाहँबुलाई॥ताहँगोपि उरहन बहुलाई। नयनन लखो यशोदामाई २०९ ताते क्रोध सहित नँदरानी। ऊखलमें बांधे हरिआनी॥ सुनि यहकथा सुवन चलिआयो। रतवंतीसों भाषि सुनायो २१० बँधेदाम भगवत सुनिएहा। रतवंती भइ विह्वलदेहा॥ महाकठोर यशोदारानी। अति सुकुमार अंग सुखदानी २११ बांधति नहिं ऊखल लैसोई। मैं बैठीउनको दुखहोई॥ बांधि रज्जु बैठी वह कैसे। प्रगटो ध्यान तासु उर ऐसे २१२ ध्यान माहँ यह सत्य लखाना। तत्क्षण त्यागि दिये निजप्राना॥ भगवत प्रेमहिये निजआनी। नित्या नन्दमजाइ समानी २१३॥

जस्सूधरजीकी कथा॥

चौ०। कुलपरिवार सहित सुखछाये। जस्सूधरदृढ़ भक्तसुहाये॥ अमितप्रीति रघुनन्दन चरिता। बिह्वलहोत तासुउर भरिता २१४ कीर्त्तन सुनतरहे इकबारा। श्रीरघुनन्दन करसुखसारा॥ याबिधि कथातहाँ चलिआई। बिश्वामित्र ऋषय सुखदाई २१५ दशरथ पहँ माँगत भे आई। मखरच्छन लक्ष्मण रघुराई॥ चले राम लक्ष्मण सुख दाना॥ इनके हिय वह ध्यान समाना २१६ बोलत भये जोरि युग हाथा। हमहूँ नाथ चलब तव साथा॥ रहो इतहिबोले रघुनन्दन। जात अहैंहम असुरनिकन्दन २१७ पुनि हम घूमि शीघ्रही ऐहैं। मखरच्छब मुनि आनँदपै हैं॥ अस कहि चलत भये भगवाना॥ इनके उरवह रूपसमाना२१८ चौदह भुवन रूप छबिहारी। कोटिन काम जासु बलिहारी॥ सहि न सके वियोगतिन केरा। दीन्हे प्राण त्यागि तिहि बेरा २१६ दो०। नित्यानँदमें प्राप्तभे प्रेमहिये बिचधारि। जियालाल बिन प्रेमके जिमिपूरुष बिन नारि २२०॥

कृष्णदासजी की कथा॥

चौ०। कृष्णदास हरि भक्त सुहाये। शिष्य सनातनजी के गाये॥ भोनिर्माण जबहिं अस्थाना। श्री मनमोहन को सुख दाना २२१ तबहिं सनातनजी सुखकारी। कृष्णदासको योग्य विचारी॥ सेवा सौंपिदियोतिन काहीं। भगवत प्रीति जानिमन माहीं २२२ कृष्णदासजी सेवा पाई। पूजन करन लाग सुख पाई॥ मन लगाइ सेवा इमि कीन्हा। भगवत को प्रसन्न करि लीन्हा २२३ भगवतको शृंगार करावैं। इकटक लाइ दृष्टि जब लावैं॥ बेसुधिहोवैं प्रेमअधीरा। रहतचेतनहिंनेक शरीरा २२४॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायक जियालाल जनमाश्रेण बिरचितेचतुर्विन्शतिनिष्ठामध्येपरिपूर्णचतुर्विन्श प्रेममाहिमानिष्ठायां

षोड़शभक्तकथावर्णनोनाम भक्ताम्बुनिधौषड्विंशस्तरङ्गः २६ ॥

दो० । ग्रहश्रुति ग्रहबिधुहायने भादूशुक्ल रबिबार । भक्ताम्बुधि पूरणभयो षष्ठी तिथि सुखसार १ सो० । छब्बिस जासु तरङ्ग हरिपददाभक्ताम्बुनिधि ।पावनकर समगंग चौबिस निष्ठायुत शुभग २ दो० । षष्ठयाधिकर सयुग्मशत जामें भक्त प्रमान । गिरिसहस्र श्रुतिशत असी रसयुत ७४८६ छन्द बखान ३ ॥

आरती ॥

आरति श्रीभक्ताम्बुधि केरी । भगवत भक्त सुयश मुदढेरी ॥ मुद मंगल मय सुन्दर सरिता । हर्ष पुलक रोमांचक भरिता ॥ दुःखदरिद्र शोक दल दरनी । ज्ञान बिराग भक्ति उर भरनी ॥ चारि पदारथ देतन देरी । कलिमल हरणि शरणि हरि देनी ॥ अभिमत दायक सरिस त्रिबेनी । कामक्रोध लोभादिक शमनी॥ व्याधी भव भय मर्कट दमनी । अशुभ क्षुद्रमृग नाशक शेरी ॥ राम धाम सोपान सुहाई । अकथनीय परभाव महाई ॥ सेवत सुलभ सकल सिधि तासू । कपट बिहीन बसत उर जासू ॥ पावत जाउर प्रीति घनेरी । बेद पुराण शास्त्रनय पूरी ॥ पढ़त सुनत संशय कर दूरी । मन मल हरणि विवेक प्रकासी ॥ आशा कुबुद्धि करन द्रुत दासी । जियालाल जीवन धन हेरी ॥ छन्दमनहरण । जानों मेरु मर्कटी पताकहून छन्द रीति अपर प्रस्तार मात्रा बर्ण जो सुहायो है । नष्टहू उदिष्ट गणदोष गुण दग्ध बर्ण द्रुगुण बिचार नाग राज समुझायो है ।। उपमो पमेय उपमानहू के नाना भेद अलंकार भावरसभेद बहुतायो है । कलिमल हरण दरण दुख जियालाल बिमल सुयश भगवत जन गायो है ॥

छन्दषट्पद । भूसुर जाति प्रसिद्ध त्रिपाठी वंश वदारा । राम कोट शुभ ग्राममध्यहू जन्म हमारा ॥ योजन मिश्रित याम्य

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ कर्मविपाकगीताप्रारम्भः ॥

दोहा ॥

जनक नन्दिनी दाशरथि बन्दि चरण सुखमूल । बरणों कर्म विपाक यह गीता जग सरिकूल १ जियालाल द्विजमन्दमति ताहि निवाहनहार । बिन श्री.सीतानाथके और न जगतवदार २ अर्जुन यह पूँछतभये यदुपतिसों चितलाइ । सोई मैं वर्णन करों श्रीरामहिं शिरनाइ ३॥ अर्जुनउवाच ॥ अन्ध होत किहि पापसों और दरिद्री जोइ । पुनि कुष्ठी किहि पाप सों कहिये श्रीहरि सोइ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अन्ध होत परदार रत दारिद्री धन-चोर । होत कुष्ठि ब्राह्मण बधे वचन किरीटी मोर ५ ॥ अर्जुनउवा-च ॥ मिलत हेम किहि पुण्यसों कौन पुण्य नर देह । कौन पुण्य हय गज मिलत कहिये प्रभुयुत नेह ६ ॥ श्री भगवानुउवाच ॥ स्वर्ण दान सुबरण मिलत भूमिदान हय नाग । अन्न दिये मानुष वपुष सुनु अर्जुन बड़भाग ७ ॥ अर्जुनउवाच ॥ कौन पाप सों तिय मरत कौन पाप सुत नास । होत शिखण्डी कौन अघ क-कहिये प्रभु गुनिदास ८ ॥ श्रीभगवानुउवाच ॥ मरतदार ऋण पाप सों पुत्र नाशयति पाप । मानभंग सों हीजरा सुनिये अ-र्जुन आप ९ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नरकजात किहि पाप सों होत न सुत किहि पाप । कौन पाप सों रोग युत कहिये श्री हरि आप १० ॥ श्री भगवानुवाच ॥ नरकजात तनुजादरवि भूसुर द्वेषि अपुत्र । करि सुर निन्दा रोग युत सुनहुँ पाण्डुके पुत्र ११॥ अर्जुनउवाच ॥ कौन पाप विक्षिप्ततनु पुत्र लाभ किहि पुण्य । भोगी नर किहि पुण्य सों कहिये नाभि हिरण्य १२ ॥ श्री भग-

वानुवाच ॥ वेश्या रत विच्छिर जग सुर सरि फल सुत होइ । दान कियो मिष्टान्न जो भोगी नर जग सोइ १३ ॥ अर्जुनउवाच ॥ मिलत तीर्थ किहि पुण्यसों रूपमिलत किहि पुण्य । कौन दान निर्मलवपुष कहियेनाथ अगुण्य १४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मिलत तीर्थ गोदान करि रूप तीर्थ अस्नान । द्रव्यदान निर्मल वपुष सुनु पारथ मतिमान १५ ॥ अर्जुनउवाच ॥ मिलत राज्य किहि पुण्यसों कोन पुण्य धनवान । कौन पुण्य विद्या मिलत कहिये श्रीभगवान १६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मिलतराज्य जग तप किये होम यज्ञ धन होइ । दै विद्या विद्या मिलत जानहुँ भारत सोइ १७ ॥ अर्जुनउवाच ॥ श्वान होत किहि पाप सों दादुर कौनेपाप । गर्दभ कौने पापसों कहिये श्रीहरि आप १८ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ पावत कपटी श्वान तनु मधुहा दादुर होइ । वेश्या रत रासभ वपुष जानिय फाल्गुन सोइ १९ ॥ अर्जुनउवाच ॥विध्वम्बक किहि पाप सों पिंगल कौने पाप। विधवानारि कौन अघ कहिये यदुपति आप २० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ संत पाप सों एक चख परपति रतपतिहीन । शास्त्र पापपिंगल वपुष पारथ मातु अकीन २१ ॥ अर्जुनउवाच ॥ कौनपाप मार्जार वपु अमल कौन अघ खाइ । बधिरहोत किहिपापसों कहिये श्री यदुराइ २२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अमलि गोत्र बधपापकरि बधिरसुविद्याचौर । दानोक्षिश्रति आखुभुक् सुनहु सूरशिरमौर २३ वेदवेद गृह विधुवरष खण्डखवसु विधुशाक । जियालाल द्विजभाषियो गीताकर्म विपाक २४ ॥ रामकोट ममधामशुभ मिश्रित उत्तर जौन । योजन एक प्रमाणहै सकल ग्राम शिर तौन २५ ॥

इतिश्रीकृष्णार्जुनसम्वादेश्रीमज्जियालालद्विजविरचिता कर्मविपाकगीतासमाप्ता ॥